चन्दामामा
जून १९९४
Rs
4

नए नए रंग!

नए नए स्वाद!

मुफ़्त
जंगल बुक
स्टिकर्स
पाने के लिए

नया

PARLE POPPINS

* रु.१.२५

नेट वेट २५ ग्राम
* अधिकतम रीटेल क़ीमत
सभी करों सहित

पॉपिन्स के ४ रैपर और एक टिकिट
लगा जवाबी लिफाफा अपने पते के
साथ यहां भेजें :
पॉपिन्स पॉइन्ट, पारले प्रॉडक्ट्स लि.,
पी. ओ. बॉक्स १०७, बम्बई-४०० ०५७

Contains no fruit juice or pulp. Contains added flavours.

everest/94/PP/6-hn

भारत में सर्वाधिक बिकने वाले कामिक्स
डायमण्ड कामिक्स

1994
चाचा चौधरी का
रजत जयंती वर्ष

जेम्स बाण्ड-21

फौलादी सिंह और
खतरनाक दुल्हन

अग्निपुत्र अभय
और चम्पा चम्बा

डायमण्ड कामिक्स डाइजेस्ट
फैण्टम-32

रसना जीनी
और काल

जीवन में भर लो रंग डायमण्ड कामिक्स के संग!

अंकुर बाल बुक क्लब के सदस्य बनें और अपने जीवन में खुशियों और मनोरंजन की बहार लाएं.

और कितना आसान है अपने इन प्रिय पात्रों से मिलना!

आप एक बार 'अंकुर बाल बुक क्लब' के सदस्य बन जाइए फिर न तो बार-बार आपको अपने मम्मी पापा से डायमण्ड कॉमिक्स लाने के लिए कहना पड़ेगा और न ही बार-बार अपने पुस्तक विक्रेता को याद दिलाना पड़ेगा, तब आपको यह चिन्ता भी नहीं रह जाएगी कि कहीं बुक-स्टॉल पर डायमण्ड कॉमिक्स समाप्त न हो जाएं। क्लब का सदस्य बन जाने पर आपको विशेष लाभ यह रहेगा कि आपको आगामी कॉमिक्स की सूचना भी यथा समय मिलती रहेगी।

कितना सुगम है 'अंकुर बाल बुक क्लब' का सदस्य बनना!

आप केवल नीचे दिये गए कूपन को भरकर और सदस्यता शुल्क के दस रुपये डाक टिकट या मनीआर्डर के रूप में भेज दें।

हर माह छः पुस्तकें एक साथ मंगवाने पर 4/- रुपये की विशेष छूट व डाक व्यय फ्री (लगभग 7/- रुपये) की सुविधा दी जायेगी। हर माह हम पांच छः पुस्तकें निर्धारित करेंगे यदि आपको वह पुस्तकें पसन्द न हों तो डायमण्ड कॉमिक्स की सूची में से पांच छः पुस्तकें आप पसन्द करके मंगवा सकते हैं लेकिन कम से कम पांच से छः पुस्तकें मंगवाना जरूरी है।

आपको हर माह Choice कार्ड भेजा जाएगा। यदि आपको निर्धारित पुस्तकें पसन्द हैं तो वह कार्ड भरकर हमें न भेजें। यदि निर्धारित पुस्तकें पसन्द नहीं हैं तो अपनी पसन्द की कम से कम 7 पुस्तकों के नाम भेजें ताकि कोई पुस्तक उपलब्ध न होने की स्थिति में उनमें से 5 या 6 पुस्तकें आपको भेजी जा सकें।

इस योजना के अन्तर्गत हर माह की 20 तारीख को आपको वी.पी. भेजी जायेगी।

हाँ! मैं "अंकुर बाल बुक क्लब" का सदस्य बनना चाहता/चाहती हूं और आपके द्वारा दी गई सुविधाओं को प्राप्त करना चाहता/चाहती हूं। मैंने नियमों को अच्छी तरह पढ़ लिया है। मैं हर माह वी.पी. छुड़ाने का संकल्प करता/करती हूं।

नाम ____________________

पता ____________________

____

डाक __________ जिला __________ पिनकोड __________

सदस्यता शुल्क 10 रु. डाक टिकट मनीआर्डर से भेज रहा/रही हूं।

मेरा जन्म ____________________

नोट : सदस्यता शुल्क प्राप्त होने पर ही सदस्य बनाया जायेगा।

डायमण्ड कामिक्स प्रा. लि.
2715, दरियागंज नई दिल्ली-110002

डायमण्ड कॉमिक्स मैजिक फन बॉक्स

- 5 मल्टी डाइमेंशनल कॉमिक्स मूल्य 30/-
- 10 डायमण्ड कॉमिक्स मूल्य 30/-
- 1 लंच बॉक्स मूल्य 20/-
- अनेक आकर्षक उपहार मूल्य 40/-

कुल मूल्य 120/-

कॅमल चॅम्प

प्रतियोगिता

कॅमल विजेता बनने और आकर्षक पुरस्कार जीतने की आपको है चाह तो उसकी राह है बहुत आसान। बस, कॅमल के अनेक प्रकार के इंद्रधनुषी रंगों की छटा से रंग दीजिए इस चित्र को रंगों की अपनी सजीली कल्पना से। अपने मन के मुताबिक आप कॅमल के क्रायॉन वॅक्स, कायन्स क्रायप्लस, ऑयल पेस्टल्स, वाटर कलर या पोस्टर कलर्स का इस्तेमाल कर सकते हैं। जीतने के लिए हैं ढेर सारे आकर्षक पुरस्कार **पहला पुरस्कार** कॅमल बम्पर मैक्सी पैक (150 रु. मूल्य के कॅमल के मिश्रित उत्पाद) **दूसरा पुरस्कार** कॅमल मिडी पैक (100 रु. मूल्य के कॅमल के मिश्रित उत्पाद), **तीसरा पुरस्कार** कॅमल मिनी पैक (75 रु. मूल्य के कॅमल के मिश्रित उत्पाद) इसके अलावा 150 बेहतरीन रंगीन पुरस्कार – "आई एम ए कॅमल चैम्प" 2- डी स्टीकर मुफ्त।

हां, मैं कॅमल विजेता बनना चाहता हूं, रंगों से भरा चित्र इसके साथ लगा है

नाम ______________ उम्र ________ वर्ष, लड़का/लड़की (कृपया निशान लगाएं)

घर का पता ______________

____

____

स्कूल ______________

नियम एवं विनियम: • प्रवेश शुल्क नहीं। खरीदने का कोई प्रमाण आवश्यक नहीं। • इस प्रतियोगिता में 15 साल की उम्र के बच्चे ही भाग ले सकते हैं। • पूरी तरह से भरकर यह पूरा पृष्ठ हमें भेजना चाहिए। • प्रवेश फॉर्म के रूप में इस पृष्ठ की फोटोकॉपी का इस्तेमाल किया जा सकता है। • कैम्लिन लि. और इंटरऐक्ट विज़न एडव.-एण्ड मार्के. प्रा. लि. के कर्मचारियों के बच्चे इस प्रतियोगिता में भाग नहीं ले सकते। • प्रविष्टियां इस विज्ञापन के प्रकाशन के महीने के समाप्त होने के 15 दिनों के अंदर **कैम्लिन लि. पोस्ट बैग सं. 37432, जे. बी. नगर, अंधेरी (पू.) बम्बई- 400 059.** को भेजें। विजेताओं को अलग से सूचित किया जाएगा। पुरस्कार भेजने के लिए चार सप्ताह तक इंतज़ार करने की कृपा करें। निर्णायकों का निर्णय अंतिम और बाध्यकर होगा। कृपया इस कूपन को केवल अंग्रेजी में ही भरें।

कॅमल

सफलता के रंग

INTERACT VISION CAM/7/HIN-A

कैम्लिन लिमिटेड, आर्ट मॅटेरियल डिविज़न, जे. बी. नगर, अंधेरी (पूर्व), बम्बई- 400 059.

बैटरी
इधर...
खिलौने उधर!
Charge
अब आएगा खूब मज़ा! ज़रा सोचो,
बिना बैटरी के बैटरी से चलनेवाले खिलौने भला किस काम के?
इस भूलभुलैया में बैटरी को
(पेंसिल द्वारा) खिलौने से
जोड़ो, खेल के अंत में एक शानदार ईनाम कर रहा है इंतज़ार!
1 'ले-एन-एग'
अंडे देनेवाली मुर्गी जी उठी!
2 बुलेट ट्रेन
सीट थामकर बैठो, बुलेट ट्रेन की असली तेज़ रफ़्तार देखो!
3 'ग्रैन् प्री'
'ग्रैन् प्री' ट्रैक पर कारों को सरपट दौड़ाओ, मौज़ उड़ाओ!
अंत
मुबारक! सारे खिलौने चार्ज हो गए. अब आई शानदार ईनाम (मुफ़्त खेल पोस्टर) की बारी... इस पन्ने को काटकर इस पते पर भेजिए:-
ब्लो प्लास्ट लिमिटेड (लॅयन डिवीज़न),
लियो हाउस, 88-सी,
ओल्ड प्रभादेवी रोड,
बम्बई - 400 025.
LEO
MATTEL
HTA 2041 95
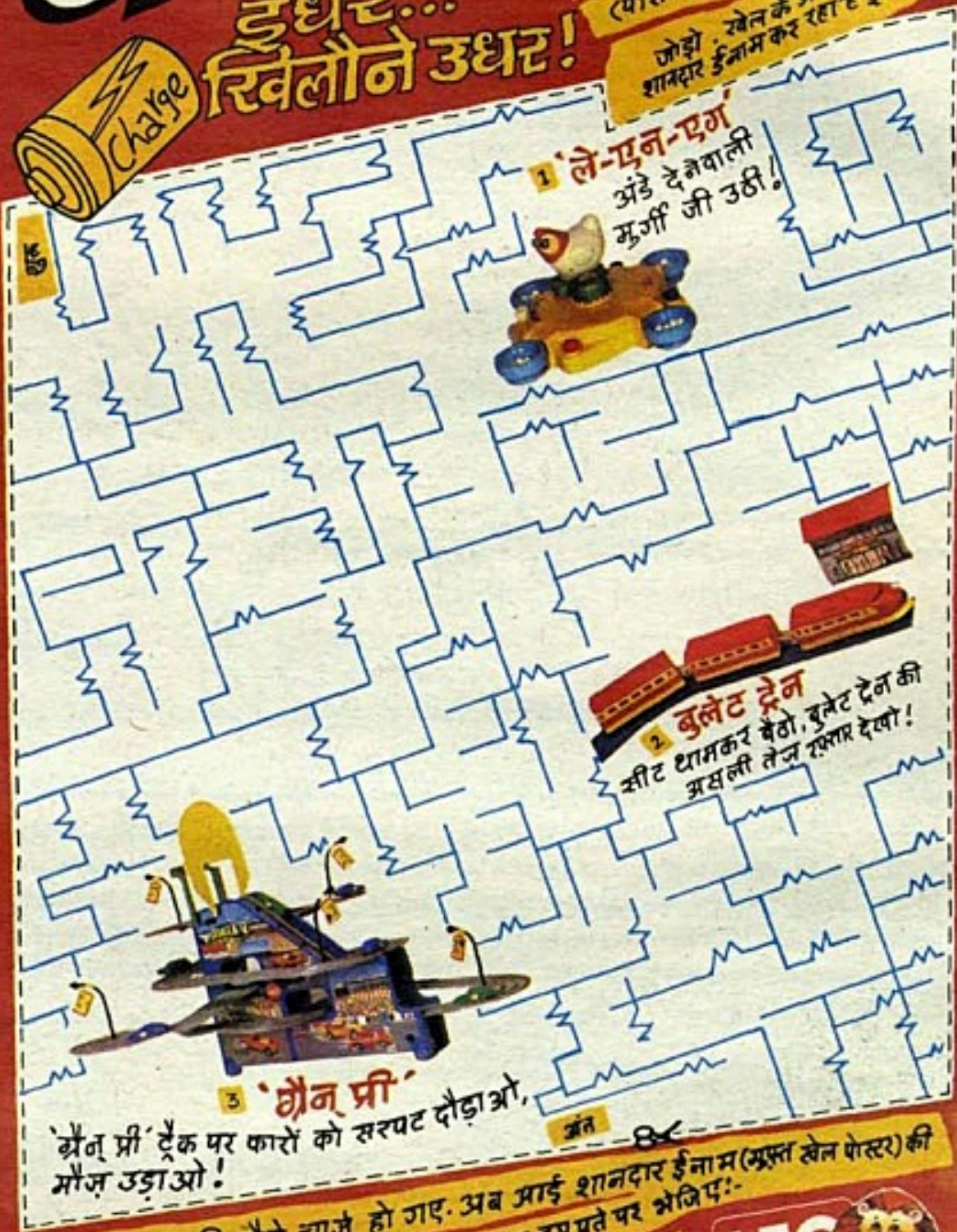
चन्दामामा

संस्थापक : 'चक्रपाणी'
संचालक : नागिरेड्डी

शिक्षा का बोझ

दो महीनों की ग्रीष्मकालीन छुट्टियाँ समाप्त होनेवाली हैं। पाठशालाओं के खुलने का समय आ गया है। नया शैक्षिक वर्ष प्रारंभ होनेवाला है। अपने पुराने मित्रों तथा सहपाठियों से मिलने के लिए बालक-बालिकाएँ आतुर हैं। वे अपने नये कक्षों में बड़े ही उत्साह के साथ प्रवेश करनेवाले हैं।

विद्यार्थियों के सामने समस्या केवल अपने पाठ्यपुस्तकों तथा कापियों की है, जिन्हें हर दिन स्कूल तक उन्हें ढोना पड़ता है। शिक्षा के अधिकारी तथा पाठशालाओं के शिक्षक भी इस मुख्य विषय पर अब तक दीर्घ चर्चाएँ करते रहे कि शिक्षा के विषय क्या हों और उन्हें विद्यार्थियों तक सुगम रूप से कैसे पहुँचाये जाएँ? भली-भाँति लोच-विचारकर वे आवश्यक विषयों को पाठ्यक्रम में भरते हैं, जिन्हें विद्यार्थियों को पढ़ना है, अध्ययन करना है। इन पाठ्यपुस्तकों के विषयों को सविस्तार समझाने की जिम्मेदारी अध्यापकों पर है।

अक्सर देखा गया है कि बच्चे अपने पाठ्यपुस्तकों तथा कापियों को ढोते हुए बड़ी ही असुविधा का अनुभव करते हैं। उनको इस दयनीय स्थिति में देखकर कुछ लोगों ने तो उनकी तुलना उन गधों से की हैं, जो बहुत ही बोझ ढोते रहते हैं। संसद के सदस्यों ने भी विद्यार्थियों की इस स्थिति पर अपना क्रोध प्रकट किया है और उन्होने मांग की कि बच्चों का यह बोझ कम किया जाए।

सरकार ने इन शिकायतों पर आवश्यक कार्रवाई के लिए एक कमेटी नियुक्त की है। यशपाल कमेटी ने इस बोझ को कम कर देने की ज़बरदस्त सिफ़ारिश की है। साथ ही प्राथमिक पाठशालाओं तथा नर्सरियों में प्रवेश के लिए किये जानेवाले साक्षात्कारों को बंद कर देने को कहा है।

ज्ञात हुआ है कि केंद्रीय सरकार द्वारा चलाये जानेवाले केंन्द्र विद्यालयों, नवोदय विद्यालयों तथा कुछ मुख्य संस्थाओं ने इस कमेटी की सिफ़ारिशों को अगले शैक्षिक वर्ष से अमल में लाने का निर्णय किया हैं।

वर्ष : ४७ | जून १९९४ | अंक : १०

एक प्रति : रु. ४ /- | वार्षिक चन्दा : रु ४८/-

समाचार-विशेषताएँ
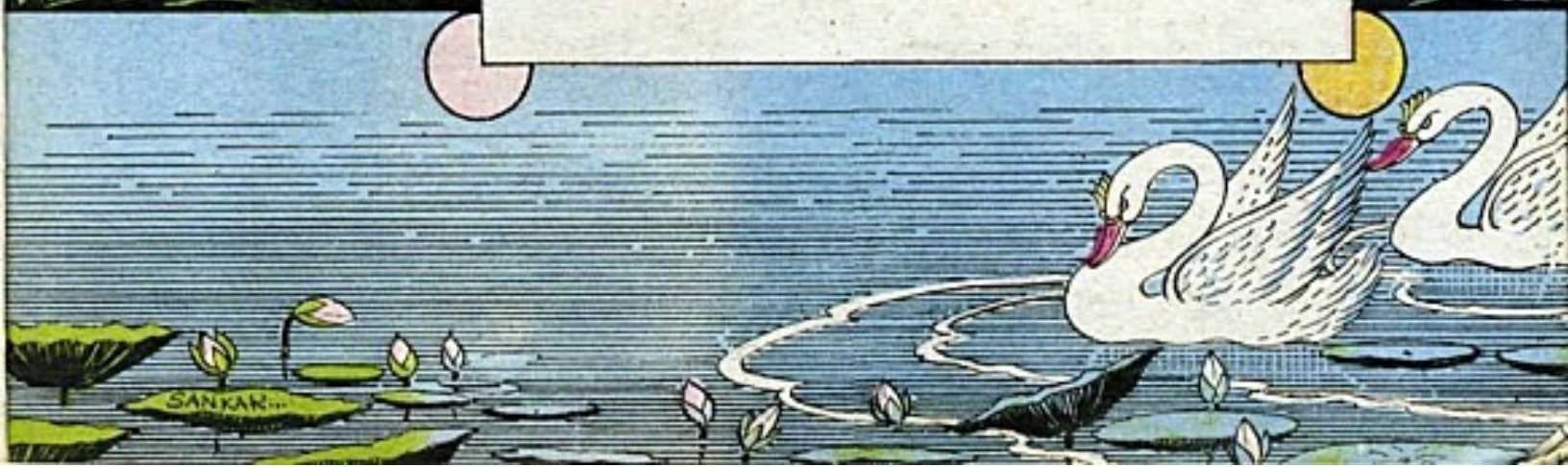
इटली - नूतन गणराज्य

लगता है, इटली की जनता ने निश्चय किया है कि क्रिस्टियन डेमाक्रटिक दल तथा वामपंथी मित्रों को भुला दें, जो गत चालीस वर्षों से शासन की बागडोर संभालते आये थे। इसीलिए अब की बार उन्होने वामपंथीय दलों के नेतृत्व को अस्वीकार किया और अन्य दलों को उन्होने अवकाश दिया। पिछले मार्च २७,२८ जो प्रमुख चुनाव हुए, उसमें क्रिस्टियन डेमाक्रटिक पार्टी तथा उनके मित्र वामपंथियों से रैटविंग पार्टियों के अत्यधिक उम्मीदवार संसद के लिए चुने गये। 'फोर्जा इटालिया' के अध्यक्ष सिल्विया बेर्लुस्कोनि युद्धानंतर की ५३ वीं सरकार शीघ्र ही बनानेवाले हैं। समझा जा रहा है कि इस सरकार के द्वारा देश के पुनः फेडरल रिपब्लिक के रूप में परिवर्तित होने की संभावना है।

''फोर्जा इटालिया'' दल को १५५ स्थान, फ्रॉकोफेनि के नेतृत्व के अधीन 'नार्थरन अलियन्स' के दल को १०५ स्थान प्राप्त हुए। अंबर्टी बोस्सी के 'नार्थरन लीग' को १०६ स्थान प्राप्त हुए। ये तीनों दल रैटिस्ट पक्ष हैं। इन तीनों पक्षों के मिल जाने से संसद में ५८ प्रतिशत मत लब्ध हुए हैं। इससे संसद में आवश्यक अधिकता इन्हें प्राप्त हुई है। कम्यूनिस्ट तथा उनके मित्रों को केवल ३४ प्रतिशत मत ही मिले हैं। फेडरलपद्धति को पुनः प्रवेश करने तथा संविधान में आवश्यक परिवर्तन लाने का निर्णय इन तीनों पार्टियों ने किया है। वे इन आवश्यक परिवर्तनों के प्रस्ताव को प्रजा के सम्मुख प्रस्तुत करेंगे और उनकी स्वीकृति लेंगे। इस फेडरल पद्धति के अनुसार प्रजा अध्यक्ष को चुनेगी। प्रधान मंत्री का चुनाव लोकसभा करेगी।

इटली की एक तरफ़ आड्रियाटिक समुद्र है। दूसरी तरफ़ अयोनियन समुद्र है, तो तीसरी तरफ़ मध्यधरा समुद्र है। इटली द्वीपों का समूह है। इन समुद्रों के सिसिली, सार्टीनिया आदि द्वीप भी इटली के ही अंतर्गत द्वीप हैं। इतिहास का कथन है कि ईसा के पूर्व ५१० से २७ तक रोमन रिपब्लिक ने इस देश पर शासन किया था। ई.पू. २७ से ४७६ तक जो रोमन साम्राज्य स्थापित हुआ, उसकी नींव जूलियस सीज़र ने डाली थी।

रोमन साम्राज्य के पतन के उपरांत इटली पर अनेकों दुराक्रमण हुए। इटली का अत्यधिक भाग

१६-१७ शताब्दियों में स्पेन के अधीन रहा। इसके बाद आस्ट्रिया ने इसपर अपना शासन चलाया, तो फिर फ्रांस ने। जब फ्रांस का सम्राट नेपोलियन वाटरलू के युद्ध में (१८१५) पराजित हुआ, तब स्वतंत्रता तथा एकता के लिए इटली में आंदोलन का प्रारंभ हुआ। वह आँदोलन १८७० में सफल हुआ।

प्रथम विश्व युद्ध के बाद (१९१४-१८) मुसोलिनी ने 'फासिज़' नामक आँदोलन को जन्म दिया और तीन ही वर्षों में प्रधान मंत्री बना। वह तानाशाह बना, उसका एकाधिपत्य रहा, और उसने जर्मनी के तानाशाह हिटलर से हाथ मिलाये। वह द्वितीय विश्वयुद्ध का कारक यों बना। १९४३ में वह प्रधान मंत्री पद से निकाला गया। जब वह अपना देश छोड़कर भाग रहा था, तो मार डाला गया।

१९४६ में इटली गणतंत्र राज्य बना। परंतु आर्थिक समस्याओं के कारण राजनैतिक क्षेत्रों में तीव्र अस्थिरता उत्पन्न हुई, जिससे ४५ वर्षों में ५२ सरकारें बनीं। कुछ सरकारें तो थोड़े दिनों के लिए ही सत्ता पर आरूढ़ रहीं।

हाल ही में शासक पक्षों ने विरोधी पक्षों से हाथ मिलाया और उन्हें भी शासन में स्थान दिया, जिससे परिस्थिति बहुत ही क्लिष्ट हुई। फलस्वरूप घूसखोरी तथा अनीति हदों को पार कर गयी। जनता ने उनका ज़बरदस्त विरोध किया।

इस पृष्ठभूमि में जनता ने परिवर्तन चाहा। उन्होने रैटिस्टों को अधिकार सौंपा। प्रधान पार्टी 'फोर्जा इटालिया' के स्थापित हुए तीन महीने ही हुए। ५७ वर्ष का इस पार्टी का नेता बेर्लूस्कोनी टी.वी. नेटवर्क का बड़ा ही अधिनेता है। यूरोप की विस्तृत प्रकाशन संस्था इसकी अपनी है। वेर्लूस्कोनी संसार के अति संपन्न प्रमुखों में से एक है। जनता उसे आधुनिक सीज़र कहे तो इसमें आश्चर्य क्यों हो?

शिष्य जगन्नाथ

सीतापुर के विश्वनाथ के तीन बेटे हैं। बड़ा खेती करता है तो दूसरा व्यापार। विश्वनाथ अपने तीसरे बेटे जगन्नाथ के बारे में बहुत ही चिंतित है, क्योंकि वह घर में नहीं रहता। जब देखो, व्यर्थ घूमता ही रहता है। पिता उसे सदा समझाते कि दोनों भाई काम कर रहे हैं। घर चलाने में वे काफ़ी मदद पहुँचा रहे हैं और तुम अकेले ही व्यर्थ घूमते रहते हो। ऐसा करने से तुम निकम्मे बन जाओगे और भविष्य में तुम किसी भी काम के नहीं रहोगे। वह अनसुनी कर देता और बाहर चला जाता।

जगन्नाथ अपने घर का कोई काम ही नहीं करता। किसी भी के घर में कोई शुभ कार्य होता हो तो वही अगुआ बनकर पूरा काम संभालता। दस आदमी अगर उसे सौंपें जाएँ तो वह उनसे काम करवाता, लेकिन रत्ती भर भी उन्हें दुख नहीं पहुँचाता। उनसे अधिकाधिक काम भी लेता। कंजूस से भी वह चंदा दिलवाता। सख्त आदमी भी उसकी बातों से नरम पड़ जाता। सब कहते कि जगन्नाथ बहुत ही व्यावहारिक युवक है।

उसी गाँव के रहनेवाले विश्वनाथ के एक रिश्तेदार ने प्रस्ताव रखा कि मैं अपनी पुत्री कमलनयनी का विवाह जगन्नाथ से करूँगा। विश्वनाथ ने उससे कहा "जब तक मेरा बेटा योग्य नहीं बनेगा, तब तक मैं शादी नहीं करूँगा। अगर मैंने यह विवाह करवाया तो भविष्य में उसकी पत्नी की जिम्मेदारी भी मुझ पर ही होगी।"

"तुम नहीं जानते। तुम्हारा बेटा बड़ा ही व्यावहारिक है। उसे वेदवन के श्रद्धानंद के पास भेजो। वहाँ सही शिक्षा प्राप्त करेगा तो मुझे विश्वास है कि राजा के दरबार में उसे नौकरी भी मिलेगी।" रिश्तेदार ने कहा।

श्रद्धानंद का नाम विश्वनाथ भी सुन चुका था। उसे यह भी मालूम है कि श्रद्धानंद हर किसी

रमण मिश्रा

को अपना शिष्य नहीं बनाता। हर किसी को उसकी परीक्षाओं में खरा उतरना पड़ेगा। उन्हें भारी रक़म भी चुकानी पड़ती है। ऐसे शिष्यों को कम समय में ही राजा के दरबार में नौकरी मिल जाती है। कुछ ऐसे शिष्य भी उसके यहाँ हैं, जो दस सालों से शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। लोगों से कैसे काम कराना है, मीठी बातें करके लोगों को कैसे आकर्षित करना है, किन उपायों के उपयोग से कैसे काम निकाला जा सकता है, आदि का वह प्रशिक्षण देता है।

रिश्तेदार का सुझाव विश्वनाथ को अच्छा लगा। उसने अपने बेटे को भी वेदवन भेजने का निर्णय लिया। वह स्वयं श्रद्धानंद से मिला और अपने बेटे के बारे में पूरा विवरण दिया।

"तुमने जो भी कहा, उससे यह साफ़ है कि तुम्हारा बेटा बहुत ही व्यावहारिक युवक है। अगर मेरी परीक्षा में वह उत्तीर्ण हो गया तो ठीक है। नहीं तो हर साल तुम्हें दो हज़ार अशर्फ़ियाँ देनी होंगीं। पढ़ाई के ख़तम होने में कितने साल लगेंगे, यह तुम्हारे बेटे की योग्यता पर निर्भर है।" श्रद्धानंद ने बताया।

विश्वनाथ ने तक्षण ही दो हज़ार अशर्फ़ियाँ दीं और कहा "आप मेरे बेटे को बिना किसी परीक्षा के प्रवेश दीजिये। मैं हर साल दो हज़ार अशर्फ़ियाँ अवश्य ही दूँगा"। वह जैसे ही सीतापुर लौटा, अपने बेटे से सारी बातें बतायीं।

जगन्नाथ को वहाँ जाने की इच्छा नहीं थी, फिर भी वह वेदवन गया और श्रद्धानंद से मिलकर बोला "गुरुवर, मैं अपने पिता के धन के बूते पर नहीं बल्कि अपनी क़ाबिलियत के बूते पर आपका शिष्य बनना चाहता हूँ। आप मेरी परीक्षा ले सकते हैं"।

"तुम्हारी परीक्षा लेने में मुझे कोई एतराज़ नहीं है। तुम्हारे पिताजी तो चाहते हैं कि मैं तुम्हारी परीक्षा ना लूँ। बिना परीक्षा के ही वे शुल्क देने दैयार हैं। तुम्हारे बारे में मेरे और तुम्हारे पिता के बीच एक समझौता हो गया है। परीक्षा में तुम खरे भी उत्तरो, पर समझौते की शर्ते तुम्हें माननी ही पडेंगी।" श्रद्धानंद ने कहा।

जगन्नाथ ने भी अपनी स्वीकृति दी। श्रद्धानंद ने उससे तरह-तरह के सवाल किये। उसके जवाबों से खुश होकर उसने कहा "मेरा शिष्य

बनकर अवश्य ही तुम मेरी ख्याति बढ़ाओगे। तुम्हें बड़ा आदमी बनने में विलँब भी नहीं होगा''।

जगन्नाथ गुरु की बातों से संतुष्ट हुआ और उसके यहाँ शिष्य बनकर रहने लगा।

छह महीने बीत गये। वेदवन में श्रद्धानंद के और भी बहुत से शिष्य रहते हैं। शीघ्र ही जगन्नाथ उन सब के प्रेम का पात्र बना। उन शिष्यों में से मदन नामक एख युवक से उसकी दोस्ती गाढ़ी होती गयी।

मदन को जगन्नाथ की अक़्लमंदी देखकर ताज़ुब होने लगा। वह पूछा करता था ''तुम्हें बहुत से विषयों का पूर्ण ज्ञान है। गुरु तुम्हें ये सब विषय कैसे सिखा पा रहे हैं''?

''मैं जो भी जानता हूँ, वे सांसारिक विषय हैं। मैने ये गुरु से नहीं सीखे'' जगन्नाथ ने कहा। किन्तु उसकी बातों का उसे विश्वास नहीं होता था।

मदन के पिता और श्रद्धानंद के बीच जो समझौता हुआ, उसके अनुसार उसे गुरु को हर वर्ष केवल पाँच सौ अशर्फियाँ ही देनी हैं। अत: उसे संदेह होता कि रक़म कम हो जाने की वजह से मेरे विषय में गुरु श्रद्धा नहीं दिखा रहे हैं।

जगन्नाथ ताड़ गया कि वहाँ के बहुत-से शिष्यों में इस प्रकार के संदेह हैं। जिन्होंने कोई शुल्क ही नहीं दिया या नहीं दे पाये, उनमें तो यह संदेह अधिक ही है।

श्रद्धानंद जो पढ़ाता था, उसमें व्यवहारिक ज्ञान की बातें होती ही नहीं थीं, इसलिए उनका संदेह और भी बलवत्तर होता गया।
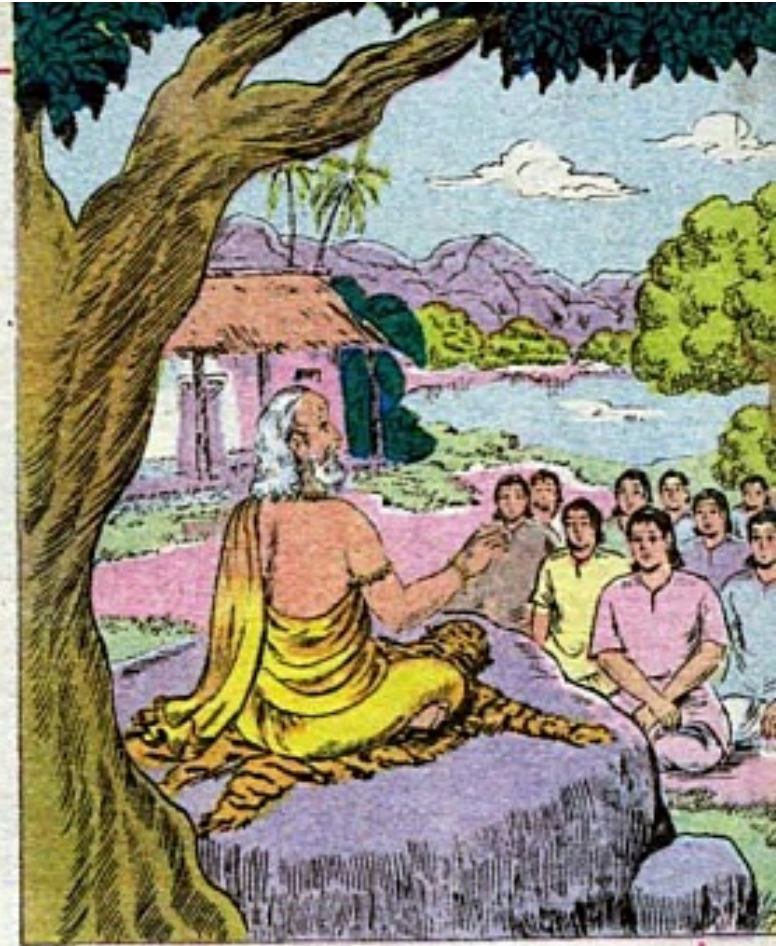
गुरु अपने आसन पर बैठता और सविस्तार बताता कि पर्वत कैसे चढ़ना है, मल्लयुद्ध कैसे करना है और पानी में किस प्रकार तैरना है? वह भली-भांति जानता है कि पर्वतों के स्वरूप व स्वभाव क्या हैं? मानव का शरीर-निर्माण किस प्रकार से हुआ है, जल-प्रवाह के लक्षण क्या हैं? श्रद्धानंद आश्रम को छोड़कर कहीं बाहर नहीं जाता। वह कहता है कि पैदल अधिक चलने से पैर दुखने लगते हैं।

शरीर को अधिक कष्ट पहुँचाने से पीड़ा होने लगती है, अत: वह मल्लयुद्ध के बारे में बताता तो बातों में ही उस कला की सूक्ष्मताओं का विवरण

देता। स्वयं मल्लयुद्ध करके दिखाता नहीं है। वह नदी में कभी नहाने नहीं जाता, क्योंकि ज्योतिषियों के कहे अनुसार उसके जल में डूब जाने की संभावना है। शिष्य कुएँ का पानी ले आते तो नहा लेता है।

अक़्सर जगन्नाथ मन ही मन गंभीर रूप से सोचता कि ऐसे गुरु से सीखने को है ही क्या? गुरु ने उसे रसोई का काम सिखाना शुरु कर दिया। किन-किन सामग्रियों की क्या-क्या विशिष्ताएँ हैं और किसी प्रत्येक सामग्री का उपयोग करके कितना रुचिकर पकवान बनाया जा सकता है आदि का जब वर्णन करता तो शिष्यों के मुँहों में पानी भर आता था। लेकिन आश्रम में कंदमूल ही खाना अनिवार्य है। पकवान निषिद्ध हैं। एक साल की समाप्ति के बाद श्रद्धानंद ने पुनः वही पाठ दुहराये। जगन्नाथ को लगता कि क्यों गुरु जीवन-संबंधी गंभीर विषयों के संबंध में कुछ नहीं बताते? वे प्रश्न और उत्तर के रूप में शिष्यों की ज्ञान-वृद्धि में योग क्यों नहीं पहुँचाते? इस प्रकार की ज्ञानेप्राप्ति से दरबार में कैसे नौकरी मिल पायेगी?

राजधानी से प्रदीप नामक एक युवक श्रद्धानंद से मिलने और उनको निमंत्रण देने आया।

प्रदीप श्रद्धानंद का शिष्य रहा। साल भर शिष्यत्व ग्रहण करने के बाद उसे राजदरबार में नौकरी मिली और नाम भी पाया। उसके सामर्थ्य से संतुष्ट होकर राजा उसका सम्मान करनेवाले हैं। उसी संदर्भ में अपने गुरु को निमंत्रण देने यहाँ आया हुआ है। अपने शिष्य के आग्रह पर श्रद्धानंद शिष्यों सहित राजधानी गया। वहाँ बड़ी सभा आयोजित हुई।

राजा ने प्रदीप को दस हज़ार अशर्फियाँ भेंट में दीं। उसके सम्मानार्थ कवियों से कविताएँ रचवायीं और राजनर्तकी ने नृत्य करके सबका मनोरंजन किया।

सम्मान-सभा में प्रदीप ने अपने गुरु को मंच पर बुलाया और उनके पैरों को प्रणाम किया। उसने कहा "मैं जिस स्थिति में आज हूँ उसके कारक मेरे गुरु ही हैं।"

गुरु सदा यही चाहते हैं कि उनके शिष्य बड़े बनें, उन्नत स्थिति में हों, ख्याति प्राप्त करें और गुरु

का नाम रोहान करें। आनंदित होकर श्रद्धानंद ने अपने भाषण में बताया ''प्रथम दिन ही मैने अपने शिष्य से बताया था कि तुम उन्नत स्थिति में पहुँचोगे और मेरा नाम भी ऊँचा करोगे। पहले ही मैं जानता था कि यही होनेवाला है और जो हुआ है, उसपर मैं अति प्रसन्न हूँ''।

अपने गुरु की बातों से जगन्नाथ भी आनंदित हुआ और अपने बग़ल में बैठे हुए मदन से कहा ''मै जिस दिन शिष्य बना, उसी दिन गुरु ने मुझसे भी यही कहा था। शिष्य बने साल गुज़र गये। मुझे ज्ञात नहीं कि यह विद्याभ्यास और कितने वर्षों तक चलता रहेगा। प्रदीप बुद्धिमान है, इसलिए एक ही साल के अंदर वह जान गया कि इस गुरु के पास और सीखने को रखा ही क्या है। वह वहाँ से चला गया और आज वह ऊँचे ओहदे पर है। मैं ऐसा नहीं कर पा रहा हूँ''।

इसी बारे में सोचते-सोचते जगन्नाथ रात भर सो नहीं पाया।

दूसरे दिन राजा श्रद्धानंद के पास आया और कहा ''मेरे दरबार में कोशाधिकारी की जगह खाली है। आपका कोई योग्य शिष्य हो तो मुझे सूचित कीजिये''।

श्रद्धानंद ने शिष्यों की ओर देखा। तब जगन्नाथ फ़ौरन उठ खड़ा हुआ और बोला ''मैं समझता हूँ मेरा शिष्यत्व पूर्ण हो गया। गुरुजी इसकी अनुमति देंगे तो मैं यह नौकरी करने सन्नद्ध हूँ''।

श्रद्धानंद ने अपनी अनुमति देते हुए जगन्नाथ से कहा ''बहुत ही शीघ्र तुम्हारा भी सम्मान होगा। उस समय इस गुरु को ना भूलना।''
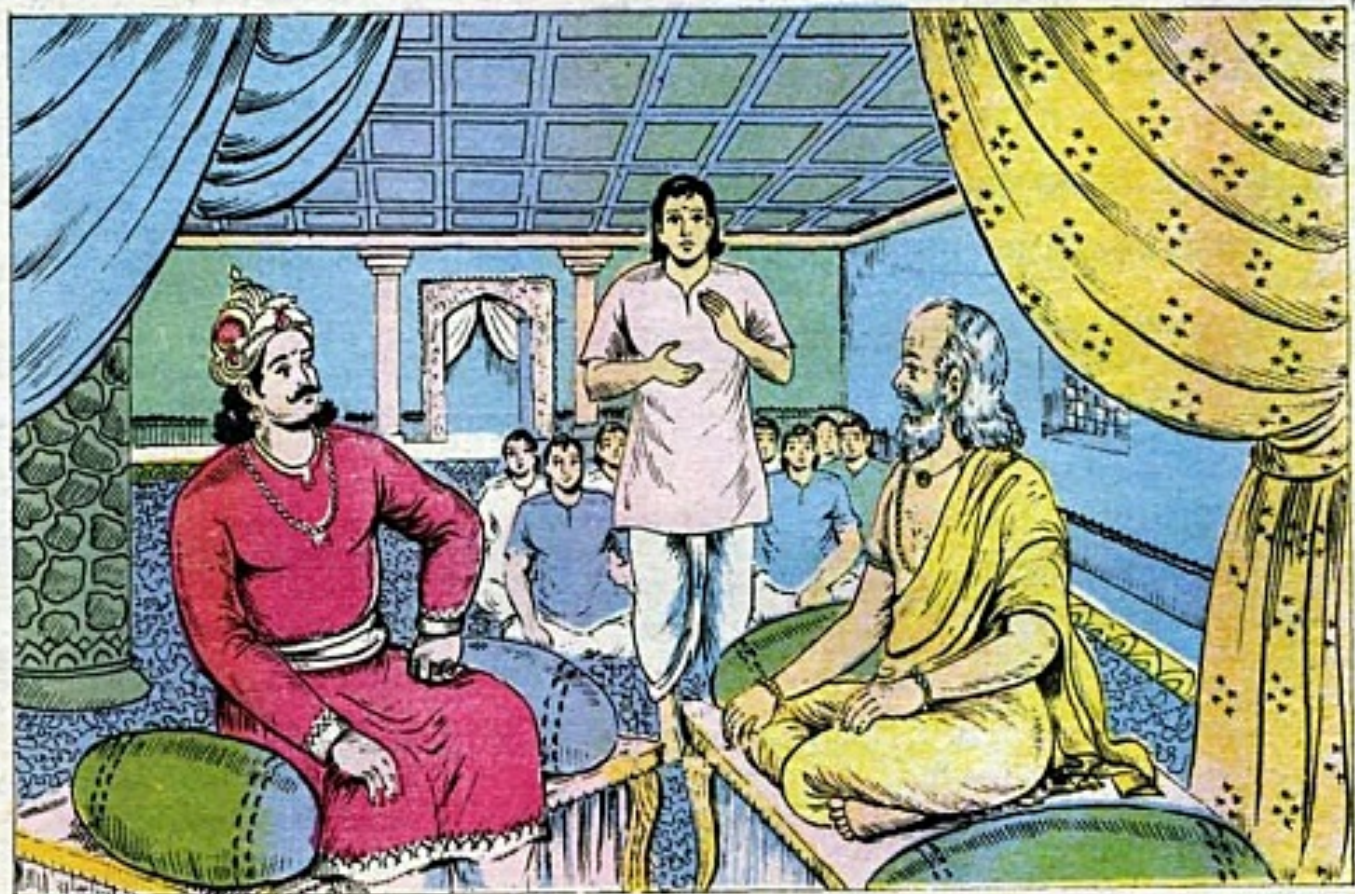
जन्ननाथ ने गुरू के पैर छुये।

मदन ने जगन्नाथ को बग़ल में ले जाकर कहा "देखा, हमारे गुरु की पक्षपात-भरी बुद्धि। तुम्हारे पिता ने दो हज़ार अशर्फियाँ दीं, इसीलिए तुम्हें दरबार में नौकरी दिलवायी। इसके लिए तुम उनके कृतज्ञ होकर सदा उन्हें याद रखोगे। इस प्रकार वे श्रेष्ठ गुरु माने जाएँगे। और हम जैसे मासूम उनके यहाँ शिष्य बनकर सदा वहीं रहेंगे, जहाँ हैं।" यों उसने अपने मन की दुखभरी बात कही।

जगन्नाथ ने मदन की पीठ थपथपायी और कहा "तुम ग़लत समझ रहे हो। क्योंकि वे तो सब शिष्यों को एक समान पाठ सिखाते हैं। वे जो पाठ पढ़ाते हैं, उनमें गहरा रहस्य है। पुस्तकों से हम जो भी सीखें, अनुभव के बिना हम पर्वत पर चढ़ नहीं सकते; युद्ध नहीं कर सकते; पानी में तैर नही सकते; पकवान नहीं बना सकते। जीवन में अनुभव प्रमुख है। उनके पाठों में अंतर्निहित इस रहस्य को जब तक हम नहीं जान पाते तब तक यही समझना होगा कि हमारा शिष्यत्व अधूरा ही है। शीघ्र ही प्रदीप ने इस सत्य से भरे रहस्य को जाना, इसलिए एक ही वर्ष में अपनी शिक्षा समाप्त करके वहाँ से चला गया। उसने जीवन में अनुभव को पर्याप्त प्रधानता दी और एक-एक करके उन्नति की सीढ़ियों पर चढ़ता गया। एक साल समाप्त हो जाने के बाद जब गुरूजी फिर से पुराने ही पाठ दुहराने लग गये, तभी हमें वास्तविकता को समझना था। ऐसा करके उन्होंने हमें सावधान कर दिया। बिना कहे ही उनके कहने का यह मतलब है कि जान जाओ कि तुह्मारी शिक्षा पूरी हो गयी। व्यावहारिक व्यक्ति समझाते नहीं, वे केवल इंगित मात्र करते हैं।"

जगन्नाथ की तीक्षण बुद्धि की प्रशंसा करते हुए मदन ने कहा "अब समझ पाया हूँ कि त्रुटि मेरी है, गुरूजी की नहीं। इस ज्ञान का लाभ उठाकर अब और कुछ समय तक गुरु की सेवा करूँगा और फिर मैं भी बाहर की दुनिया में क़दम रखूँगा"।

जगन्नाथ राजदरबार में नौकरी करने लगा। उसने कमलनयनी से विवाह किया। अपनी योग्यता तथा अनुभव के बल पर बड़ा बना। उससे गुरु की भी कीर्ति बढ़ी।

कीर्तिसिंह - १

कोसल राज्य के राजा थे सुषेण । जयसेन उनका निकट दोस्त था। वह राजा का सगा दोस्त ही नहीं था, बल्कि उनका आंतरिक सलाहकार भी था। शतरंज के खिलाड़ी राजा अपने ही समान खिलाड़ी जयसेन से अक़्सर शतरंज खेला करते थे।

एक दिन जयसेन ने राजा को शतरंज में हराया और हँसते हुए कहा "समझ में नहीं आती सृष्टि की यह विचित्रता । आप जैसे महाराज को हराने से जो आनंद मुझे प्राप्त हुआ, इससे भी अधिक आनंद अपनी पुत्री के हाथों हारने में मिलता है। वह आनंद वर्णनातीत है"।

राजा पहले ही सुन चुके थे कि जयसेन की इकलौती पुत्री शक्तिसेना सुँदरी ही नहीं, गुणवती भी और बुद्धिमान भी है। राजा मानों इस सत्य से अपरिचित-से बोले "तुम्हारी बेटी क्या शतरंज के खेल में इतनी प्रवीण है?"

"अवश्य, आप चाहें तो स्वयं इसकी परीक्षा ले सकते हैं।" जयसेन ने ऐसी योग्य पुत्री के पिता होने के गर्व का अनुभव करते हुए सगर्व उत्तर दिया।

"अवश्य कल रात ही को मैं तुम्हारे घर आऊँगा। तुम्हारा आतिथ्य भी स्वीकार करूँगा और साथ ही तुम्हारी पुत्री की शतरंज खेलने की कुशलता की भी परख करूँगा।"

"अवश्य" जयसेन ने कहा । वादे के मुताबिक राजा ने दूसरे दिन जाकर शक्तिसेना से शतरंज खेला । बड़ी तेज़ी से मोहरों को बढ़ाती हुई शक्तिसेना ने बड़ी ही सुगमता से राजा को तीन बार हराया ।

ऐसी पुत्री के पिता होने का मुझे गर्व है; असीम आनंद है। ऐसी योग्य पुत्री को पाकर मुझे इस बात का दुख भी नहीं है कि मेरा कोई पुत्र नहीं है। पुत्र होता तो भी मुझे इस बात का संदेह है कि वह इतना सक्षम, योग्य तथा कुशल होता''। जयसेन ने कहा।

उसके इस उत्तर से राजा के अभिमान को चोट पहुँची। उन्होने कहा ''तो तुम्हारे कहने का यह मतलब है कि मेरे पुत्र कीर्तिसिंह से तुम्हारी पुत्री अधिक योग्य और सक्षम है, है ना?''

जयसेन ने राजा से ऐसे प्रश्न की आशा नहीं की। वह घबड़ा गया। कुछ कहने ही जा रहा था, राजा ने उसे रोका और कहा ''घबड़ाने की कोई ज़रूरत नहीं है। तुम्हारी पुत्री की एक परीक्षा लेता हूँ। उसमें अगर वह पारित हुई तो उसे अपनी बहू बनाऊँगा। पराजित हुई तो उसे अपनी पुत्री मानकर ससुराल भेजने का प्रबंध करूँगा। मेरी शर्त तुम्हें मंज़ूर है?''

कोई दूसरा चारा ना पाकर जयसेन ने 'हाँ' कह दिया। राजा ने कहा ''तो सुनो। तुम्हें तो मालूम ही है कि मेरा पुत्र कीर्तिसिंह देश के उत्तरी भाग के आरावली पर्वत प्रदेशों में स्थित कृष्णचंद्र के गुरुकुल में विद्याभ्यास कर रहा है। कुलगुरु उसकी बहुत प्रशंसा भी करते रहते हैं। उनका कहना है ''आपका पुत्र आति बुद्धिमान है। सब विद्याओं में पारंगत है। उसकी सब विद्याएँ अब समाप्त हो चुकी हैं। अतः सीघ्र ही

शक्तिसेना की चतुरता, बुद्धिमत्ता तथा उसके सौंदर्य पर राजा मुग्ध हो गये। वे सोच भी नहीं सकते थे कि इतनी छोटी उम्र में एक कन्या शतरंज के खेल में इतनी प्रवीण हो सकती है।

जयसेन के आतिथ्य को स्वीकार करते हुए राजा ने कहा ''शक्तिसेना जैसी योग्य पुत्री के पिता होने के नाते तुम्हें बधाई देता हूँ। किन्तु जयसेन, वह स्त्री ना होकर पुरुष होती तो और भी अच्छा होता''।

''आपकी बात को अस्वीकार करने का मुझे दुख है। मेरी पुत्री शस्त्र और शास्त्रों में भी अति प्रवीण है, निपुण है। उसके सम्मुख किसी भी पुरुष की क्या गिनती? पराक्रमी कहलाये जानेवाले कितने ही पुरुषों से मेरी पुत्री उत्तम है।

वह राजधानी लौटेगा।'' अगली पूर्णिमा के दिन अकेले ही राजधानी लौट रहा है। तुम्हारी पुत्री को उसे रास्ते में ही रोकना है और पूरब की दिशा में जो जंगल है, उस ओर उसे मोड़ना है। तुम यह भी जानते हो कि उन जंगलों में देवी शक्ति का एक प्राचीन मंदिर है। उस मंदिर में तीन दिन तक कीर्तिसिंह को बंदी बनाकर रखना होगा। तुम्हारी पुत्री अगर यह काम कर पायी तो उसे मैं अपनी बहू बनाऊँगा। परंतु हाँ, यह काम तुम्हारी पुत्री को अकेली ही करना होगा। किसी भी की सहायता उसे लेनी नहीं चाहिये। राजकुमार को इस स्थान के सिवा और कहीं नहीं ले जायेगी। उसे और कहीं भी बंदी बनाना नहीं चाहिये।''

जयसेन राजा की इन शर्तों से डर गया; ठंडा पड़ गया। उसका मस्तिष्क निष्क्रिय हो गया।

एक दो पल रुककर जयसेन ने राजा के हाथ पकड़ लिये और कहा ''महाराज, पितृगर्व के नशे में आकर मैंने जो-जो बातें कहीं, वापस ले रहा हूँ। मुझे क्षमा कीचिये। एक सुकुमारी की ऐसी कठोर परीक्षाएँ लेना आपको भी शोभा नहीं देता''।

महाराज ने गंभीर हो कहा ''ऐसी बात है। ज़रा अपनी पुत्री को बुलाना। सुन भी लें कि उसके क्या विचार हैं और उसका क्या निर्णय है?''

जयसेन ने डरते-डरते शक्तिसेना को बुलाया। महाराज ने संपूर्ण रूप से उसे सब कुछ समझाया और बोले ''पुत्री, तुम्हारे पिता में पितृगर्व ही नहीं, पितृभीति भी हैं। इसलिए तुमसे पूछ रहा हूँ। मेरा प्रस्ताव तुम्हें स्वीकार है?''

शक्तिसेना ने सिर झुकाकर कहा ''स्वीकार है''।

पुत्री का उत्तर सुनकर जयसेन स्तंभित रह गया। महाराज ने मंद मुस्कान भरते हुए जयसेन की पीठ थपथपायी और राजमहल की ओर निकल पड़े।

महाराज के चले जाते ही शक्तिसेना पिता के पास आकर बैठ गयी और बोली ''पिताजी, इतना भयभीत होने की क्या आवश्यकता है?''

पुत्री की बातें सुनकर जयसेन ने कहा

"शर्त जब मान ही ली है तो भयभीत होने से क्या लाभ? किन्तु आख़िर मैं एक पिता हूँ। मेरा दिल तो भय से काँपेगा ना? मुझे अच्छी तरह से मालूम है कि कीर्तिसिंह कैसा राजकुमार है। कृष्णचंद्र जैसे उत्तम गुरु का प्रिय शिष्य है। राजनीति, युद्ध-कला तथा व्यावहारिक ज्ञान में उसकी बराबरी का कोई है ही नहीं। ऐसे व्यक्ति को धोखा देकर उसे बंदी बनाना कोई आसान बात नहीं है। तिसपर तुम्हें यह काम अकेली ही करना पड़ेगा। मेरा भय इसी को लेकर है कि तुम यह कठिन काम कैसे कर पाओगी?"

निर्भीक होकर शक्तिसेना ने अपने पिता से कहा "महाराज भी ये सारी बातें जानते हैं। फिर भी पिताजी, आप ही बताइये वे हमारी ऐसी कठोर परीक्षा क्यों ले रहे हैं?"

जयसेन आवेश में आकर बोला "और किसलिये? तुमपर और तुम्हारी योग्यताओं पर मुझे गर्व है और मेरे इस गर्व को वे तोड़ना चाहते हैं। इसीलिए महाराज ने यह चाल चली है।"

शक्तिसेना हँसी और बोली "प्यार मनुष्य के हृदय को बलहीन कर देता है। उसे गुमराह कर देता है। आप ही इसके उदाहरण हैं। पिताजी,हर निकृष्ट भावना की एक उत्तम स्थिति होती है। एक विद्यार्थी दूसरे समर्थ विद्यार्थी को देखकर उससे ईर्ष्या करता है, उससे प्रतिस्पर्धा की इच्छा रखता है। ईर्ष्या निकृष्ट भावनाओं की उत्तम स्थिति है। उसी तरह पितृगर्व भी गर्व की भावना की उत्तम स्थिति है। ऐसी उत्तम स्थिति के विनाश का इच्छुक अधम होता है। मेरा विचार है कि महाराज ऐसे अधम नहीं हैं। उनके प्रस्ताव के पीछे अवश्य ही कोई गूढ़ार्थ होगा। मेरे विचारों पर ग़ौर कीजिये तो आप ही जान जायेंगे कि सत्य क्या है?"

पुत्री की बातों से लज्जित होकर जयसेन ने कहा "हाँ, तुमने सच कहा। महाराज ऐसे अधमों में से नहीं हैं। ऐसे आदमियों में से नहीं हैं" कहता बड़बड़ाता हुआ, सोचता रहा। उसे देखते हुए लगता था मानों अभी-अभी उसका नशा उतर गया हो।

थोड़ी देर बाद जयसेन ने अपना सर उठाया और प्यार से अपनी पुत्री को देखते हुए लंबी

साँस खींचते हुए बोला "बेटी, तुमने ग़लतफ़हमी से मुझे बचा लिया। अगर हमारी कल्पनाएँ सच ही हों, भगवान करे सच हों, तो तुम्हें बहुत-सी बातें कहनी हैं। ध्यान से सुनो। मुझे भी लगता है कि राजा की इस चाल के पीछे अवश्य ही कोई गूढ़ार्थ है। राजा की इस वर्तमान क्रिधा से पूर्व जुडा हुआ है। उस समस्या को सुलझाने के लिए ही, हो सकता है राजा ने यह क़दम उठाया हो।

राजा सुषेण की और हमारी मित्रता बहुत पहले से ही चली आ रही है। अनेकों पीढ़ियों से हमारे कुटुंब के सदस्य कोसल राजाओं के स्नेह-पात्र रहे हैं; उनके आंतरिक सलाहकार रह चुके हैं। इस बंधुत्व का प्रारंभ हुआ हमारे दादाओं के परदादाओं के समय से। उनका भी मेरा ही नाम था। वे बहुमुखी प्रतिभाशाली थे। मुख्यतया वे तंत्र मंत्र विद्याओं के पंडित थे। देश-विदेशों में भी उनकी बराबरी का कोई तांत्रिक नहीं था।

उस काल के महाराज विचित्रवर्मा तांत्रिक विद्याओं में पर्याप्त अभिरुचि रखते थे। उस विद्या में उन्होने थोड़ा-बहुत ज्ञान भी प्राप्त किया। इस विद्या में पारंगत जयसेन के बारे में उन्होंने सुना। दोनों का मिलाप मैत्री में परिणित हुआ। उन्होने उन्हें आंतरिक सलाहकार का ओहदा देकर उनका सम्मान किया। समस्त शास्त्रों में पारंगत, उदार तथा सच्चे राजा की मैत्री से जयसेन बहुत ही प्रसन्न हुए। कुछ ही समय में वे जिगरी दोस्त बन गये। वे महाराज के लिए अपने प्राण की भी बलि देने सन्नद्ध रहते थे।

जयसेन की तांत्रिक विद्याओं की सहायता से दोनों अदृश्य रूप में राज्य में विचरण करते थे। प्रजा के सुख-दुखों की जानकारी प्राप्त करते थे। दुखियों के दुख दूर करते थे।

उनके शासन-काल में प्रजा सुखी थी, शांत थी, आवश्यकताओं से मुक्त थी। उनका जीवन निराटंक गुज़र रहा था। चोर और लुटेरे महाराज के नाम से काँपते थे। राजा अथवा प्रजा के विरुद्ध बुरा काम करने से किसी को भी साहस नहीं होता था।

महाराज के जन्म-दिन के अवसर पर जयसेन ने मोतियों का एक हार उन्हें भेट में दिया। यह हार कोई साधारण हार नहीं था, अद्‌भुत मांत्रिक शक्तियों से भरा हुआ था। वह हार शुद्ध मोतियों से बना हुआ नवरत्न खचित पदक से संलग्न था।

साधारण ढ़ंग से बनाये गये उस हार में अपनी समस्त शक्तियाँ लगाकर जयसेन ने उसमें तीन अद्‌भुत शक्तियों रखीं। वह हार जिसके पास है, वह अदृश्य रहकर जहाँ चाहे, आ-जा सकता है। सामने का आदमी सच बोल रहा है या झूठ, इसे पहनने पर मालूम हो जाता है। इन तीनों शक्तियों में से अत्यंत आकर्षक शक्ति तीसरी है। इसको पहनने पर भूमि के अंतराल में जहाँ कहीं भी मोती, हीरे, जवाहरात आदि जैसी अनमोल निधियाँ हों, उनका पता लग जाता है। महाराज के प्रति जयसेन को अपार आदर था, प्यार था और उन्हीं के फलस्वरूप बना यह अपूर्व हार।

जयसेन के दिये हुए इस अद्‌भुत हार की विलक्षणता को जानकर महाराज अवाक् रह गये। उनका हृदय कृतज्ञता से भर गया। जयसेन के प्यार, विश्वास तथा मैत्री का स्मरण आते ही उनकी आँखों में आँसू आ गये।

समय गुज़रता गया। एक बार जयसेन से पुरस्कृत हार को पहनकर महाराज परिवार सहित शिकार के लिए पूरब के जंगलों में गये। अस्वस्थता के कारण जयसेन महाराज के साथ जा नहीं पाये। राजधानी में ही रह गये।

दिन भर शिकार करने के बाद महाराज और बाकी सब शिबिरों में लौट आये और निद्रा की गोद में गये।

सैनिकों को छोड़कर बाक़ी सब लोग सो गये। लेकिन महाराज को नींद नहीं आयी। उनका मन बार-बार बता रहा था कि कुछ होनेवाला है। लेकिन स्वयं वे जानते नहीं थे कि क्या होनेवाला है? अशांत हो वे शिबिर से बाहर आये और लक्ष्यहीन होकर इधर-उधर घूमने लगे। महाराज की इस विचित्र चर्या को सैनिक देखते रहे और उनके पीछे-पीछे ही जाने लगे।

महाराज विचित्रवर्मा एक जगह पर आकर रुक गये और तक्षण वहाँ ज़मीन खोदने का हुक्म दिया। यह बताने की आवश्यकता नहीं कि ऐसा करने का आदेश उन्हें उस हार से प्राप्त हुआ, जिसे उन्होने उस समय पहन रखा था।

थोड़े ही समय में मशालों की रोशनी में वह प्रदेश जगमगा उठा। खोदने का काम शुरु हो गया। रात को शुरु किया गया वह काम दूसरे दिन की दुपहर तक चलता रहा।

दूपहर को उन्होने देवी शक्ति की एक काली मूर्ति भूमि के अंतराल में पायी। उसकी नाक में हीरे का बेसर था। उस मूर्ति को देखते ही महाराज के आनंद की सीमा नहीं रही। उन्होंने अपने आनंद को वश में रखते हुए आज्ञा दी कि वह मूर्ति तक्षण ही राजधानी ले जायी जाए। उसने यह भी बताया "ऐसी मूर्तियाँ शक्तियों से भरपूर होती हैं। महल में ले जाने के पहले हमें परिपूर्ण रूप से जानना होगा कि इसे ले जाने से शुभ होगा या अशुभ। इसका निर्णय ज्ञानी ही कर सकते हैं। हमें जल्दवाज़ी में आकर ग़लत क़दम उठाना नहीं चाहिये।"

कह नहीं सकते कि यह भागय था या दुर्भाग्य। मंत्री प्रह्लाद ने महाराज के इस प्रयत्न को रोका। उसने कहा कि आगमशास्त्रज्ञ तथा तांत्रिक जब तक अपनी स्वीकृति नहीं देंगे, तब तक इस मूर्ति को यहाँ से हटाना नहीं चाहिये। उसने यह कहकर सावधान भी किया कि ऐसा करने पर शायद अशुभ हो।

राजा अनिच्छापूर्वक चुप रह गये और कुछ सैनिकों को वहीं छोड़कर परिवार सहित राजधानी लौटे।

(सशेष)

बड़ा राजा-छोटा राजा

धुन के पक्के विक्रमार्क ने पेड़ से फिर से शव को उतारा और अपनी भुजाओं पर ड़ाल लिया। यथावत् मौन श्मशान की तरफ़ बढ़ता गया। तब शव के अंदर के बेताल ने कहा "राजन्, लगता है कि किसी महान लक्ष्य को साधने के लिए इतनी कठोर यातनाएँ सहे जा रहे हो। तुम्हें इसकी भी परवाह नहीं कि यह आधी रात का समय है और यह भयानक श्मशान है। अगर मेरी कल्पना सही हो तो तुम्हें एक सलाह देना चाहूँगा। जब कार्य की सिद्धि बहुत ही समीप हो तो ऐन वक़्त पर कुछ ऐसे लोग होते हैं जो अपने लक्ष्य को, अपने आशय को भुला देते हैं। वे अपने ध्येय के बिल्कुल विपरीत ही बरतते हैं, जिससे उनका पूरा परिश्रम व्यर्थ हो जाता है। यह भूल बुद्धिमान तथा अनुभवी व्यक्तियों से भी होती है। मेरी तो हृदयचूर्वक यही इच्छा हैं कि ऐसी भूल तुमसे ना हो। तुम्हें इस सत्य से अवगत कराने के लिए कुमुद

बैताल कथा

नामक एक बुद्धिमान की कहानी सुनाऊँगा। अपनी थकावट दूर करते जाओ और यह कहानी भी सुनते जाओ। तुम्हारे मार्ग-दर्शन में इस कहानी का बहुत ही उपयोग होगा'' और बेताल यों कहने लगा।

सुमंत त्रिपुर राज्य का शासक था। उसके शासन-काल की अवधि में राजकर्मचारियों में घूसखोरी बहुत ही प्रबल हो गयी थी। इस कारण से समर्थ व्यक्तियों को राज-दरबार में नौकरी मिल नहीं पाती थी। प्रजा जो करें चुकाती थी, वे घूसखोर खा जाते थे। इस वजह से ख़ज़ाना खाली हो गया। ख़ज़ाने के खाली हो जाने की वजह से राजा करें बढ़ाता और प्रजा से वसूल करता था। करों के रूप में प्राप्त धन से कुछ समय तक काम चलाता था। फिर जब धन समाप्त हो जाता तो राजा करें और बढ़ाता था।

त्रिपुरदेश के चंद्रावती नामक नगर में कुमुद नामक एक बुद्धिमान था। उसकी अक़्ल इतनी पैनी थी कि किसी भी कठिन समस्या को वह हल कर पाता था। कितने ही लोग उसकी सलाहों के लिए उससे मिलने आ-जाया करते थे। देश में अकाल पड़ गया, जिस वजह से उसके पास लोगों का आना-जाना बंद हो गया। प्रजा की कोई आमदनी नहीं रह गयी। वस्तुओं की क़ीमतें भी हद से ज़्यादा बढ़ गयीं। कर भी समय-समय पर बढ़ाये जाने लगे। उसे लगा कि करें बढ़ाकर राजा जनता के प्रति अन्याय कर रहे हैं, राज-धर्म ठीक तरह से निवाह नहीं रहे हैं। उससे यह देखा नहीं गया और वह राजा से मिलने राजधानी निकल पड़ा।

राजा से जो भी मिलना चाहे, उसे समीर नामक राजकर्मचारी से अनुमति लेनी पड़ती है। उससे मिलना भी कोई सुलभ बात नहीं। उसके घर पर पहरा देनेवालों को कुमुद ने दो-दो अशर्फ़ियों की बख़्शीश दी। तब जाकर वह अंदर जा पाया ओर समीर से मिल सका।

समीर ने पूछा ''राजा से तुम्हारा क्या काम है?''

''प्रजा जब तरह-तरह के कष्ट सह रही है तब राजा का कर्तव्य है वह उनकी सहायता करे; उनके कष्टों को दूर करे। हमारे राजा कोई ऐसा काम नहीं कर रहे हैं, उल्टे कर बढ़ाते जा रहे हैं। मैं

राजा का ध्यान इस ओर आकर्षित करना चाहता हूँ और उन्हें बताना चाहता हूँ कि वे कितनी ग़लती कर रहे हैं।'' कुमुद ने उत्तर दिया।

''राजा सब कुछ जानते हैं। खज़ाना खाली हो तो बेचारे राजा क्या कर सकेंगे? करें बढ़ाना ही तो एकमात्र मार्ग है'' समीर ने कहा।

''राजा होने का हक़दार तो वही है, जो इस का मार्ग जाने। अगर उन्हें मालूम ना हो तो मैं उन्हें उपाय सुझाऊँगा'' कुमुद ने कहा।

समीर ने कहा ''वह उपाय क्या है, मुझसे बताओं। मैं राजा को सुनाऊँगा''।

कुमुद ने गंभीरता से कहा ''ऐसा नहीं हो सकता। केवल राजा को ही यह उपाय मालूम होना चाहिये। अत: मैं स्वयं उनसे मिलूंगा।''

''राजा का दर्शन करने के लिए कितने ही ऐरे-ग़ैरे लोग आते रहते हैं। ऐसे लोगों को रोकने के लिए ही मेरी नियुक्ति हुई है। तुम मुझे सौ अशर्फियाँ दो। मैं तुम्हें छोटे मंत्री के पास भेजने की अनुमति दूँगा। वे तुम्हें मझले मंत्री के पास भेजेंगे। मझला मंत्री तुम्हें बड़े मंत्री के पास भेजेंगे। तुम्हें सबको संतुष्ट करना होगा, तभी तुम्हें राजा के दर्शन हो सकते हैं। मैं ही एक ऐसा हूँ, जो सबसे कम लेता हूँ।'' समीर ने बिना किसी झिझक के स्पष्ट बता दिया।

कुमुद जान गया कि राजा का दर्शन असंभव है तो वह बहुत ही निराश हुआ। वह राजधानी से जंगल की ओर चल पड़ा। वहाँ एक मुनि से उसकी भेंट हुई। मुनि ने उसे देखकर उससे कहा ''अच्छा हुआ, तुम सही समय पर आ गये। मैं हिमालय पर्वतों पर जानेवाला हूँ। मेरे पास बहुत ही

महिमावान अंगूठी है। मैं चिंतित था कि यह अंगूठी किसे देकर जाऊँ?

इस अंगूठी में सफ़ेद पथ्थर है। बुरे आदमी से पाला पड़ा तो इस अंगूठी का सफ़ेद पथ्थर नीला हो जायेगा। इस अंगूठी को पहननेवाला तीन बार अगर पंचाक्षरी मंत्र पढ़ेगा तो वह जो चाहेगा, उसे मिलेगा।''

कुमुद ने मुनि से अंगूठी ली और अपनी उँगली मे डाल ली। मुनि के पाँव छूकर प्रणाम किया और चल पड़ा।

अंगूठी की महिमा से कुमुद तुरंत अपने यहाँ गया और अपने परिवार के सदस्यों से बताया कि हम राजधानी जाएँगे और सुखमय जीवन बिताएँगे।

उँगली की महिमा के कारण एक संपन्न व्यक्ति ने मुफ़्त में उसे अपने घर में रहने की अनुमति दी।

राजधानी बड़ा विशाल नगर था। साधारण मनुष्यों से कुमद मिलता रहा और जानकारी प्राप्त की कि कौन-कौन घूसखोर हैं। ऐसे लोग एक नहीं, दो नहीं, हज़ारों की संख्या में थे। इतनी बड़ी संख्या में उन्हें पाकर कुमुद को बहुत ही दुख हुआ। वह पहले कुमुद नगर के प्रमुख व्यापारी के पास गया। जैसे ही उससे मिला, उसकी अंगूठी का सफ़ेद पथ्थर नीला हो गया। अब यह स्पष्ट मालूम हो गया कि वह व्यक्ति अनैतिक है। कुमुद ने उससे कहा ''तुम घोर पापी हो। हरज़ाने के रूप में मुझे हर मास दस हज़ार अशर्फ़ियाँ दो। इससे पाप धुल जायेगा और पुण्य कमाओगे। तुमने मेरी बात नहीं मानी तो तेरे हाथ-पाँव बेकार हो जाएँगे''।

व्यापारी उसकी धमकी से डरा नहीं। कुमुद ने मन ही मन पंचाक्षरी मंत्र तीन बार जपा। बस, व्यापारी वहीं का वहीं गिर गया। उसके हाथ-पाँव बेकार हो गये। इससे वह घबड़ा गया और कुमुद को रक़म देने का आवश्यक इंतज़ाम किया। इस प्रकार कुमुद बहुत-से अनैतिक व्यक्तियों से मिला और उन्हें डरा-धमका कर उनके स्तर के अनुसार उनसे धन प्राप्त किया। और ऐसा प्रबंध भी किया, जिससे उसे हर महीने में धन-राशि मिलती रहे।

कुमुद अब सुंदर भवन में रहने लगा। उसने

घोषणा भी करवाई की कि वह ग़रीबों की सहायता करेगा और उनके जीने के लिए जो आवश्यक वस्तुएँ हैं, उन्हें मुफ़्त में देगा। इससे बड़ी संख्या मैं लोग उसके यहाँ आने लगे।

सामान्य जनता में कुमुद की ख्याति खूब फैली। नीतिहीन व्यक्ति पहले राजा को शिकायत करने से ड़रे अवश्य, पर धीरे-धीरे उन्होने साहस बटोरा और राजा से फ़रियाद की। राजा ने बड़े मंत्री को बताया। बड़े मंत्री ने छोटे मंत्री को बताया। इस प्रकार आख़िर यह फ़रियाद समीर तक पहुँची। वह दस सैनकिों को लेकर कुमुद के घर पर आया।

कुमुद ने कहा "पहले अपने पापों की क़ैफ़ियत दो।"

"कितनी हिम्मत है तेरी, मुझसे क़ैफ़ियत माँगने की। तुझे जेल में ठूँसना ही होगा। सैनिकों को भी साथ लाया हूँ।"

"अच्छा किया। पहले उन लोगों को अपने घर भेजो और पाँच हज़ार अशर्फ़ियाँ मँगवाओ। हर महीने इसी तरह रक़म भेजते रहो।" कहकर तीन बार पंचाक्षरी मंत्र का मन ही मन जपन किया। बस, समीर वहीं ज़मीन पर गिर पड़ा। उसके हाथ-पाँव बैठ गये। सिपाही उसके घर गये और अशर्फ़ियाँ ले आये। तभी वह ठीक हो पाया।

मझले और बड़े मंत्री का भी यही हाल हुआ। वे भी बड़ी-बड़ी रक़म उसे देते गये।

राजा को यह बात मालूम हुई। उन्हें समझने मे देर नहीं लगी कि कुमुद कोई साधारण व्यक्ति नहीं, बल्कि असाधारण व विशिष्ट व्यंक्ति है। वह स्वयं उससे मिलने निकल पड़ा।

कुमुद ने राजा के पैर छूकर प्रणाम किया। राजा चकित होता हुआ बोला "तुम्हारे बारे में बहुत कुछ सुन रखा है। किन्तु मुझे मालूम नहीं था कि तुममें मेरे प्रति आदर की इतनी भावना है।"

"मैं आपसे बड़ा राजा हूँ। फिर भी अनीति को नीति के पैर छूने ही पड़ेंगे ना?" कुमुद ने कहा।

"तो मतलब यह हुआ कि तुम अनैतिक हो। तुमने यह मान भी लिया है। जान-बूझकर तुमने अनीति को क्यों अपनाया?" राजा ने पूछा।

"मैंने कहा, मैं बड़ा राजा हूँ। आपने एतराज़ नहीं किया। इसका यह मतलब हुआ कि आपने मान लिया है कि मैं बड़ा राजा हूँ" कुमुद ने कहा।

"मैं तो साधारण राजा हूँ। तुम्हारे पास तो मंत्रशक्ति है, इसलिए मानना ही पड़ेगा कि तुम बड़े राजा हो।" राजा ने कहा।

कुमुद हँसा और बोला "आपने राजवंश में जन्म लिया है। फलस्वरूप आप राजा बने। जिस सिंहासन पर आप आसीन हुए, उस सिंहासन ने आपको मंत्रशक्तियाँ प्रदान की है। इसीलिए प्रजा अपने ऊपर लगाये गये करों को आपको चुका रही है। आप ही बताइये, हम दोनों में फ़रक़ ही क्या है?

खज़ाना क्यों खाली हो रहा है? आपने कभी सोचा भी है कि राजकर्मचारी प्रजा के धन का दुरुपयोग कर रहे हैं। आपके अधिकारियों तथा व्यापारियों में अनीति सीमाओं को पार कर चुकी है। कुमुद ने कहा।

"सरासर झूठ है। मेरे राज्य में अनीति है ही नहीं। तुम्हीं मेरे राज्य के एकमात्र व्यक्ति हो, जो अनैतिक हो"। राजा ने क्रोधित होकर कहा।

"मैं कैसे अनैतिक हो सकता हूँ। प्रजा पर आधारित छोटे राजा हैं आप। मैं, आधारित हूँ कुछ अनैतिक व्यक्तियों के धन पर। मैं इसलिए बड़ा राजा हूँ।" कुमुद ने कहा।

राजा में कुमुद की बातों से ज्ञानोदय हुआ। उन्होंने कुमुद को वचन दिया "भविष्य में अनीति नहीं होने दूँगा। स्वार्थी और अनैतिक नागरिकों को कड़ी से कड़ी सज़ा दूँगा। न्याय की आधारशिला पर अपना शासन चलाऊँगा"।

कुमुद ने अब उँगली का रहस्य खोला। राजा ने वह अंगूठी माँगी। कुमुद ने उसे देने से अस्वीकार किया और कहा "राजन, इस जन्म में यह मेरे पास रहेगी और मेरे वारिस इसके हक़दार होंगे। आप किसी भी हालत में अपना वचन मत भूलियेगा।" राजा को यों सावधान करके वह अपने गाँव चल पड़ा। रास्ते में उसने वह अँगूठी एक सरोवर में फेंक दी।

पूरी कहानी सुनाने के बाद बेताल ने कहा "राजन्, मानता हूँ कि कुमुद बुद्धिमान है, जनता के कल्याण का इच्छुक है, पर तुम्हें नहीं लगता कि उसका बरताव अविवेक पूरित है?

राजा असमर्थ है, प्रजा के प्रति अजागरूक है, शासन को सुचारू रुप से चलाने की क्षमता नहीं रखता। तब उसे चाहिये था कि स्वयं राजा बने, शासन की बागडोर अपने हाथ में ले। लेकिन उसने तो हाथ में आया हुआ अच्छा अवसर, सुवर्ण अवसर खो दिया। उसने राजा से कहा था कि अंगूठी मेरे ही पास होगी और मेरे बाद मेरे वारिसों को मिलेगी। लेकिन जाते-जाते उसे उसने एक सरोवर में फेंक दी। क्या यह उसका पागलपन नहीं? अंगूठी राजा को देता तो राजा उसकी सहायता से स्वार्थी तथा अनैतिकों को अपने काबू में रख पाता। मेरे संदेहों का समाधान जानते हुए भी तुम मौन ही रह गये, तो तुम्हारा सर टुकड़ों में फट जायेगा''।

विक्रमार्क ने उसके संदेहों को दूर करते हुए कहा ''कुमुद राजधानी से निकला, मुनि से महिमावान अंगूठी पायी। कभी भी उसके मन में राजा बनने की इच्छा नहीं जगी। इसलिए तुम्हारा यह कहना कि कुमुद ने अच्छा अवसर हाथ से जाने दिया, बिल्कुल ही निराधार है। राजा ने जब अंगूठी माँगी तो वह उसे ना देकर उसने साबित भी किया है कि वह केवल बुद्धिमान ही नहीं, ज्ञानी भी है। क्योंकि राजा को शासन की बागड़ोर संभालनी चाहिये, अपने राजनैतिक चातुर्य तथा अपने अधिकार बल पर। ऐसा ना करके मंत्र-तंत्र की शक्तियों का उपयोग करने से बुरे परिणाम निकल सकते हैं। कुमुद ने कहा था कि मेरी मृत्यु के उपरांत मेरे उत्तराधिकारी इसके अधिकारी होंगे। यह केवल राजा को सचेत करने तथा ड़राने के लिए था।

अगर वह अंगूठी उसके उत्तराधिकारियों को मिलेगी और उन उत्तराधि-कारियों में से किसी स्वार्थी ने उसका दुरुपयोग किया तो राज्य छिन्नाभिन्न हो जायेगा। बेचारी प्रजा अनावश्यक ही आपदाओं से घिर जाएगी। इसीलिए उसने अंगूठी सरोवर में फेंक दी।''

राजा का मौन-भंग करने में बेताल इस बार भी सफल हुआ। वह शव को लेकर अदृश्य हो गया और पेड़ पर जा बैठा।

(आधार- 'वसुंधरा' की रचना)

चतुर राजकुमारी

अवंती देश की राजकुमारी उमासुंदरी यौवन में प्रवेश करते-करते केवल युद्ध-विद्या में ही नहीं बल्कि शासन - संबंधी विषयों में भी पारंगत हुई। राजा ने उसका विवाह करना चाहा। योग्य वर के लिए उसने अड़ोस-पड़ोस के सब राजकुमारों को आह्वान दिया। उनके बीच परस्पर प्रतिस्पर्धाओं का आयोजन किया। इन प्रतिस्पर्धाओं में पुष्पवंत तथा विक्रमवर्मा दोनों समस्त विद्याओं में समान प्रमाणित हुए। इस कारण राजा के सम्मुख गंभीर समस्या उठ खड़ी हुई।

उसने अपनी पुत्री से कहा ''तुमने तो देखा ही है कि परिणाम क्या हैं। कल प्रात:काल दोनों के नाम एक काग़ज़ पर लिख रखूँगा और हमारे परिवार के सब सदस्यों की उपस्थिति में तुम्हें वह काग़ज़ निकालना होगा। जो काग़ज़ तुम निकालोगी और उसपर जिसका नाम होगा, वही तुम्हारा भावी पति होगा।

दोनों राजकुमारों में से विक्रमवर्मा को वह चाहती है। किन्तु पुष्पवंत अपने मित्र का पुत्र है, अत: राजा की मनोच्छा है कि उसका विवाह उसी से संपन्न हो। अपनी सहेली के द्वारा राजकुमारी को मालूम हुआ कि राजा ने दोनों काग़ज़ों पर पुष्पवंत का ही नाम लिख रखा है।

दूसरे दिन सब की उपस्थिति में राजा ने एक सुवर्ण पात्र पुत्री के सामने रखा, जिसमें लिखे गये काग़ज़ हैं।

राजकुमारी ने एक काग़ज़ निकाला और अपने पिता से कहा ''पिताजी, होनेवाले अपने पति का नाम लेते हुए मुझे लज्जा आती है। इसलिए दूसरा जो काग़ज़ है, उसे आप ही लीजिये और उसमें लिखित नाम पढ़िये। दूसरे काग़ज़ पर लिखे गये नामवाला व्यक्ति ही मेरा पति होगा ना?

दूसरे काग़ज़ पर भी पुष्पवंत का ही नाम था, इसलिए अपनी पुत्री का विवाह राजा को विक्रमवर्मा से करना पड़ा। राजकुमारी की अक्लमंदी की प्रशंसा करते हुए राजा ने पुत्री का विवाह विक्रमवर्मा से ही किया।

-बी. रघुराम

चन्दामामा परिशिष्ट-६७

हमारे देश के वृक्ष

बोधिवृक्ष

सिद्धार्थ बहुत समय तक बोधिवृक्ष के तले बैठे रहे, तभी उनमें ज्ञानोदय हुआ। बोधिवृक्ष के तले उन्हें ज्ञानोदय हुआ, इसीलिए उनका नाम बुद्ध पड़ा। जिस स्थल पर यह वृक्ष है, उस स्थल का नाम हुआ बोधगया। यह स्थल प्रसिद्ध भी हुआ। सम्राट अशोक ने बौद्ध धर्म ग्रहण किया। उन्होने अपनी पुत्री संघमित्रा को बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए श्रीलंका भेजा। वह अपने साथ इस वृक्ष की एक शाखा को ले गयी और ई.पू. २८८ में श्रीलंका के अनुराधापुर में रोपा। लगभग २,२०० पूर्व रोपा गया यह वृक्ष अब भी जीवित है।

संस्कृत भाषा में 'अश्वथ्थ वृक्ष' के नाम से यह प्रसिद्ध है। इस वृक्ष को लाटिन में 'फेकस रिलिजियेसालिन' कहते हैं। यह पवित्र वृक्ष माना जाता है। साधारणतया मंदिरों में तथा गाँवों के बीच के चबूतरों के पास ये वृक्ष पाये जाते हैं। यह भी विश्वास किया जाता है कि इन वृक्षो को रोपनेवालों को पुण्य प्राप्त होता है। इसकी जड़ें भूमि के अंदर बहुत दूर तक जाती हैं। किन्तु साधारणतया इन वृक्षों अथवा इसकी शाखाओं को नहीं काटते।

बोधिवृक्ष के पत्ते हृदय के आकार में कोमल और चिकने होते हैं। पत्ते का आख़िरी भाग पूँछ की तरह होता है। चूँकि पत्ते नीचे की ओर झूके हुए होते हैं, इसलिए थोड़ी भी हवा चले तो ध्वनि आने लगती है। इसके फलों को पक्षी चाव से खाते हैं। पक्षी इनके बीजों को जहाँ चाहे, वहाँ फेंकते जाते हैं, इसलिए उजड़ी दीवारों के बीच तथा टूटे चबूतरों के बीच इसके पौधे उग आते हैं।
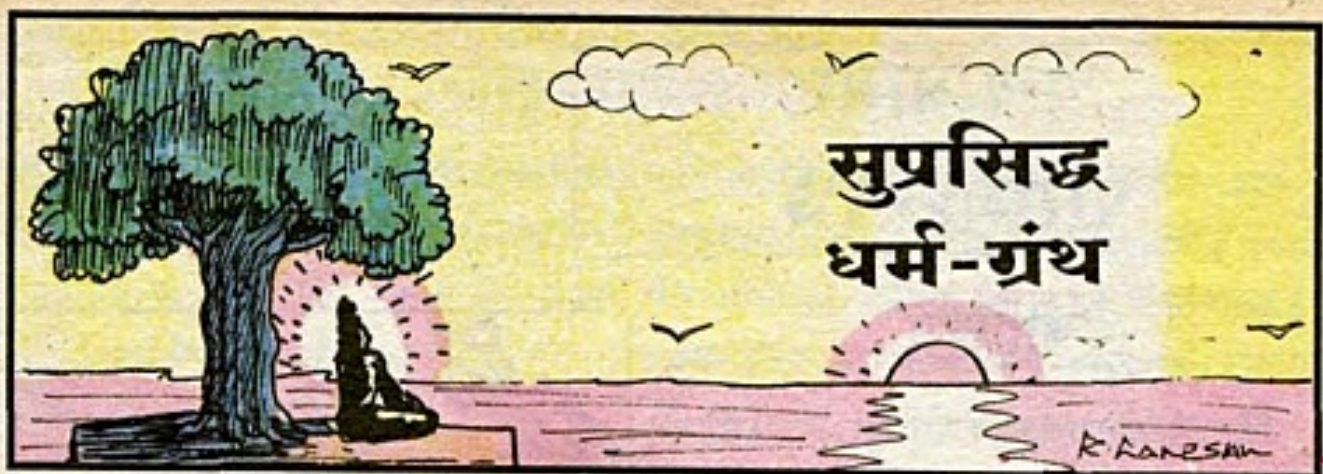
त्रिपिटकाएँ

गौतम बुद्ध का जन्म हुआ, उनमें ज्ञानोदय हुआ, उन्होने अपने भौतिक देह को त्यजा वैशाख पूर्णिमा के दिन ही। इसीलिए वैशाख पूर्णिमा को बुद्धपूर्णिमा कहते हैं। बुद्धपूर्णिमा इसी महीने में पड़ती है।

जीवन दुख भरित है। अत: ज्ञानियों को 'निर्वाण' प्राप्त करने का पयत्न करना चाहिये, क्योंकि यह जन्म-मरण रहित है। यह प्रबोधन उन्होने (ई. पू. ५६६-४८६) में दिया। उन्होने अपने शिष्यों को उपदेश दिया कि दुखों का मूल कारण इच्छाएँ हैं। उन इच्छाओं को त्यागने से कर्मबंधन से मुक्ति पाकर निर्वाण प्राप्त होता है। किन्तु उनके उपदेश उनके जीवन-काल में लिपि-बद्ध नहीं हुए। उपस्थित शिष्यों ने भी उन्हें लिपिबद्ध करने का प्रयत्न नहीं किया। परंतु बौद्ध पंडितों ने उनके उपदेशों को भली-भांति स्मरण रखा और वे अपने शिष्यों को दुहराते रहे। बुद्ध की मृत्यु के दो सौ वर्षो के बाद सम्राट अशोक ने बौद्ध पंडितों को बुलाया और बुद्ध के उपदेशों को क्रमानुसार लिपि-बद्ध करवाया। बुद्ध के उपदेश तीन भागों में संकलित हुए। वे हैं; विनय पिटक, सुत्त पिटक तथा अभिधम्म पिटक। इसीलिए उन्हें त्रिपिटक कहते हैं। 'पिटक' का अर्थ है टोकरी।

आध्यात्मिक समाज के लिए आवश्यक नैतिक नियमों के संबंध में बताता है विनय पिटक। जिनका जीवन-लक्ष्य निर्वाण है, उन्हें किस प्रकार की जीवन-पद्धति को आचरण में रखना है, सुत्त पिटक व अभिदम्म पिटक समझाते हैं। इन तीनों में सुत्त पिटक प्रधान है। इससे ग्रहण किये हुए ४२३ सूत्र ही धम्मपद नामक ग्रंथ में संग्रहीत हैं और यह ग्रंथ सुप्रसिद्ध भी है।

त्रिपिटक उस काल की प्रचलित भाषा पाली में रचे गये हैं। अब वह भाषा कुछ इने-गिने पंडितों तक ही सीमित है। त्रिपिटक के सूत्र लयबद्ध हैं। वे गंभीर भाव-गर्भित हैं। उदाहरण के लिए दो सूत्रों को लीजिये ''द्वेष का अंत कभी द्वेष से नहीं होता; अद्वेष से ही द्वेष का अंत होता है'' ''पुष्पों की सुँगंध बहती हवा के सम्मुख टिक नहीं सकती। किन्तु ईमानदार की सुगंध (प्रभाव)

सुख और दुखों व उतार-चढ़ावों का सामना करती हुई दशों दिशाओं में व्याप्त होती है।

त्रिपिटक बौद्ध धर्म के आधार ग्रंथ हैं। इनके साथ-साथ बौद्ध जातक कथाएँ भी मुख्य हैं। ये कथाएँ बोधिसत्व बने बुद्ध के विविध पूर्व जन्मों का विवरण देते हैं। और साथ ही उन जन्मों का भी विवरण देते हैं, जिनमें उन्होने जंतु बनकर जन्म लिया था। विविध प्रकार के जन्मों के कारण भूमि पर जिस जीवन का उन्होने स्वयं अनुभव किया, उसका सार इन ग्रंथों में है। बोधिसत्व नीति तथा ईमानदारी के प्रतीक थे। उन्होने उत्तम धर्म का आचरण किया, जो मानव के लिए आदर्श है। ये कथाएँ इसी को आदर्श को प्रस्फुटित करती हैं।

क्या तुम जानते हो?

१. यहूदियों के राज्य की स्थापना किसने की?
२. रेडक्रास की स्थापना किसने की?
३. दक्षिणी अमेरीका के 'बोलीविया' का नाम कैसे पड़ा?
४. पैगंबर मोहम्मद के बाद के प्रथम खलीफा कौन थे?
५. क्विनेन नाम का औषध देनेवाला पेड़ कौन-सा है?
६. हमारे देश में फिरंगियों को उपयोग में लानेवाला प्रथम आक्रामक कौन था?
७. १९६४ में साहित्य के लिए प्राप्त नोबेल पुरस्कार का तिरस्कार करनेवाला सुप्रसिद्ध फ्रेंच तत्ववेत्ता कौन था?
८. भूमि गोल है, यह सिद्धांत पहले पहल किसने प्रस्तुत किया?
९. एक ग्रीक तत्ववेत्ता ने बताया था कि चंद्र में स्वयंप्रकाश नहीं। उसका नाम क्या है?
१०. सबसे बड़ा अफ्रीका देश कौन-सा है?
११. बौद्ध मत की दो प्रधान शाखाएँ कौन-सी हैं?
१२. अमेरीकी अध्यक्ष पद को केवल एक महीना मात्र संभालनेवाला नेता कौन था?
१३. यूरोप में एक देश की राजधानी बीस द्वीपों पर बसी है। देश का और राजधानी का नाम क्या है?
१४. पंद्रहवीं शताब्दी में छपाई की मशीन का आविष्कारक कौन था?
१५. जापान में लिखित संविधान का प्रवेश करानेवाला सम्राट कौन था?
१६. संसार में प्रथम महिला प्रधान मंत्री कौन थीं?

उत्तर

१. अब्राहम
२. हेनरी ड्यूनॉट
३. १८२५, स्पैन देश को स्वतंत्रता दिलायी सैमन बोलीवर। उन्ही के नाम पर इसका नाम पड़ा।
४. अबू बेकर
५. सिंकोना
६. बाबर
७. जॉनपाल सार्त्रे
८. पैथा गरिनि
९. अनाक्सा गोरास
१०. सूडान
११. हीनयान, महायान
१२. विलियम हेन्री हारिसन, १२ वाँ अध्यक्ष
१३. स्वीडन स्टाकहोम
१४. जोहान गटेनबर्ग
१५. मैजी सम्राट
१६. सिरिमावो बंडारनायके (श्रीलंका)

शास्त्री की बहू

रामपूर में रामशास्त्री नामक एक संपन्न पुरोहित था। कृष्णशास्त्री नामक विवाह-योग्य उसका एक पुत्र था। ग्राम में उसने अच्छा नाम कमाया। सब कहते थे कि कृष्णशास्त्री बहुत ही बुद्धिमान है। पिता की इच्छा थी कि किसी अक़्लमंद लड़की से उसका विवाह हो। उन्होने तीन-चार कन्याओं को देखा भी। वे सुँदर अवश्य थीं, परंतु रामशास्त्री को लगा कि अक़्लमंदी में वे उसके पुत्र के समान नहीं हैं। कृष्णशास्त्री को अपना दामाद बनाने के लिए बहुत-से धनी भी आये। वे जानते थे कि कृष्णशास्त्री का पिता रामशास्त्री साधारण पुरोहित है। फिर भी उनको विश्वास था कि कृष्णशास्त्री जैसा नेक, चतुर व अक़्लमंद दामाद मिल जाए तो उनकी पुत्री सुखी रह पायेगी। किन्तु कृष्णशास्त्री ने उनके सब प्रस्तावों को ठुकरा दिया। उसे धन की परवाह नहीं थी। वह तो अपने पुत्र के लिए सुँदर व अक़्लमंद वधु ही चाहता था। वह इस सत्य को भली-भाँति जानता था धन से सुख ख़रीदा नहीं जा सकता।

पड़ोस के सीतारामपुर से उनका एक रिश्तेदार एक रिश्ता लेकर आया। उसने कहा कि उसी के गाँव के धर्मशास्त्री की पुत्री योग्य कन्या है और उसका विवाह निस्संकोच आप अपने सुपुत्र से कर सकते हैं। उसने यह भी कहा कि जिन योग्यताओं की खोज में अब तक आप हैं, वे सारी योग्यताएँ उस कन्या में हैं। आप स्वयं उसकी परीक्षा ले सकते हैं।

कन्या को देखने के लिए रामशास्त्री, पत्नी तथा पुत्र समेत उस गाँव में गया। घोड़े की गाड़ी जब धर्मशास्त्री के घर के सामने रुकी तो उसकी आवाज़ सुनकर वह बाहर आया। गाड़ी से उतरते हुए रामशास्त्री को उसने देखा।

धर्मशास्त्री तुरंत आगे बढ़ा और रामशास्त्री को प्रणाम किया। उसने कहा "आपके बंधु सीताराम शास्त्री ने आपके आने का समाचार

रमा देवी

सोने की गुड़िया जैसी है। अब रही बात, केवल अक़्लमंदी की। आपकी पुत्री की बुद्धिमत्ता की परीक्षा मेरा पुत्र कृष्णशास्त्री करेगा। अगर आपकी पुत्री इस परीक्षा में पारित हो जायेगी तो समझ लीजिये, यह रिश्ता पक्का है''।

''निराटंक परीक्षा लेने दीजिये। मेरी पुत्री सौंदर्य में रति देवी है तो विद्याओं में सरस्वती भी है। स्वयं इस सत्य को अभी जान जाएँगे। मेरी पुत्री की परीक्षा आपका पुत्र अपने इच्छानुसार कर सकता है'' धर्मशास्त्री ने कहा।

पिता ने इशारा करते ही कृष्णशास्त्री ने प्रथम प्रश्न पूछा ''आपके गृह में दर्पण के आगर्भ शत्रु कितने हैं?''

राधा ने दरहास करते हुए कहा ''मेरी बहनें और मेरा भाई सब दर्पण के सच्चे मित्र हैं। कोई भी दर्पण के शत्रु नही हैं''।

कृष्णशास्त्री ने पूछा ''अपनी बात नहीं बतायी आपने?''

''हाथ में जो कंकण है, क्या उसे भी आप दर्पण में ही देखते हैं?'' राधा ने उल्टा सवाल किया।

''अच्छा, यह बताइये कि आपके घर में पहले दर्पण के कितने शत्रु थे और अब कितने लोग मित्र के रूप में परिवर्तित हूए?'' कृष्णशास्त्री ने पूछा।

''मेरी दादी मात्र में यह परिवर्तन हुआ है। उनकी अभी-अभी मृत्यु हुई है।'' राधा ने कहा।

''क्या आपके गाँव में भी महीने में एक बार

दिया है।'' कहकर उन्हें सादर अंदर ले गया।

थोड़ी देर के बाद धर्मशास्त्री की पत्नी अपनी पुत्री राधा का अलंकार करके उस कमरे में ले आयी, जहाँ अतिथि बैठे हुए थे। राधा ने रामशास्त्री दंपतियों को प्रणाम किया। चटाई पर सिर झुकाकर बैठ गयी। उस कन्या के सौंदर्य तथा नम्रता पर प्रसन्न हुआ रामशास्त्री। उसने सोचा कि अब बात केवल यह जानने की है कि वह कितनी अक़्लमंद है।

धर्मशास्त्री ने रामशास्त्री से कहा ''महाशय, मेरी तीन पुत्रियाँ हैं और एक पुत्र। मेरी ज्येष्ठ पुत्री राधा है। बाक़ी तीनों को कल ही उनके मामा त्योहार के अवसर पर अपने गाँव ले गये हैं।''

रामशास्त्री ने कहा ''महोदय, आपकी पुत्री

अमावास्या होत्ती है? अथवा उस रात को भी पूर्णिमा ही होती है'' । कृष्णशास्त्री ने पूछा।

''हमारे गाँव में अमावास्या की रात में भी पूर्णिमा ही होती है। सच कहा जाए तो आज तक किसी ने भी हमारे गाँव में अमावास्या की रात देखी ही नहीं'' । राधा ने कहा।

''गर्मी के दिनों में भी आपके ग्राम के खेतों में क्या चिड़ियाँ आती हैं?'' कृष्णशास्त्री ने पूछा।

''हमारे गाँव के खेतों में चिड़ियाँ सब ऋतुओं में आती हैं'' राधा ने कहा।

''ठीक है। क्या आपके पिता आकाश जैसा विशाल मंडप और भूदेवी जैसी विस्तृत पादा ड़ालकर हमारा विवाह रचा सकते हैं?'' कृष्ण शास्त्री ने शरारत से भरा सवाल किया।

''इतने बड़े स्तर पर विवाह करने पर हमारे लोगों का घर आकाश ही हो जायेगा'' राधा ने कहा।

रामशास्त्री प्रश्न और उत्तर ध्यान से सुन रहा था। दख़ल देते हुए उसने पुत्र से कहा ''अब कुछ और पूछने की आवश्यकता नहीं है। दृढ़ हो गया है कि कन्या केवल सुँदरी ही नहीं, बल्कि बुद्धि में भी पर्याप्त तीक्षण है।'' उसने धर्मशास्त्री से कहा ''अब विलंब मत कीजिये। पंचाग देखकर अच्छा मुहूर्त निकालिये''।

धर्मशास्त्री प्रसन्न होता हुआ बोला ''मुझे संपूर्ण विश्वास था कि मेरी पुत्री आपकी परीक्षाओं में भी अवश्य ही खरी उतरेगी। आपके इच्छानुसार शीघ्र ही विवाह का प्रबंध करूँगा।''

धर्मशास्त्री और उसकी पत्नी से अनुमति प्राप्त करके रामशास्त्री अपने परिवार सहित घोड़े की गाड़ी में बैठा।

गाड़ी जाने लगी। थोड़ी दूर जाने के बाद राम शास्त्री की पत्नी ने कहा ''पुत्र ने जो प्रश्न पूछे और वधु ने जो उत्तर दिये, वे मेरी समझ में बिल्कुल नहीं आये।''

इसपर रामशास्त्री हँसा और बोला ''मैं जानता था कि तुम समझोगी नहीं, इसलिए सुनों, मैं तुम्हें समझाता हूँ। बेटे ने पूछा था कि तुम्हारे घर में कितने लोग दर्पण के आगर्भ शत्रृ हैं? इसका अर्थ यह हुआ कि उनके घर में कितने लोग जन्म से ही बदसूरत हैं। इसका जवाब उस कन्या ने बड़ी अक़्लमंदी से दिया। उसने कहा कि मेरी

बहनें और मेरा भाई सब दर्पण के मित्र हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि वे सब देखने में सुंदर हैं। दूसरे प्रश्न का उत्तर देते हुए अप्रत्यक्ष रूप से उसने बताया कि कंकण जैसे अपने सौंदर्य के लिए उसे दर्पण की आवश्यकता नहीं हैं।

पहले दर्पण के मित्र रह चुके और उपरांत वे उसके शत्रुओं में परिवर्तित हुए। इसका यह अर्थ हुआ कि यौवन-काल में सौंदर्य बिखरा पड़ा था और यौवन के लुप्त होते ही वे दर्पण में अपना रूप देखने की इच्छा ही नहीं रखते थे। उसका यह कथन अपने घर के वृद्धों से था। ऐसी बूढ़ी उसकी दादी हाल ही में मर चुकी थी। देखा, उसके उत्तरों में कितना चातुर्य था ?

हमारे पुत्र ने पूछा था कि सीतारामपुर में माह में एक बार अमावास्या होती है या नहीं या उस दिन भी पूर्णिमा ही होती है। उसने कहा कि अमावास्या की बात ही नहीं उठती क्योंकि यहाँ पूर्णिमा ही पूर्णिमा होती है। यहाँ के लोगों ने अमावास्या देखी ही नहीं। इसका यह अर्थ हुआ कि गाँव में प्रकाश की सुविधा है, इसलिए उन्होने अंधेरा देखा ही नहीं।

प्रश्न था कि गर्मी के दिनों में भी खेतों में चिड़ियाँ होती हैं? गर्मी के दिनों में भी फ़सले होती हैं। क्योंकि गाँव के तालाबों और कुओं में पानी हो तो साल भर फ़सलें होती हैं। क्योंकि ऐसे खेत वर्षा पर निर्भर नहीं होते। इसलिए उसने कहा कि सब ऋतुओं में चिड़ियाँ यहाँ रहती हैं।

आख़िरी प्रश्न था- आकाश जैसा विशाल मंडप व भूदेवी जैसी विस्तृत पादा डालकर हमारा विवाह होगा। उसने उत्तर में कहा था कि अत्य-धिक खर्च हो जाए तो तो माता-पिता को घर बेचना पड़ेगा। तब आकाश ही उनका घर होगा। अर्थ हुआ कि विवाह के बाद उन्हें किसी पेड़ की साया मे जीवन बिताना होगा। अब समझ गयी हो ना? तुम्हारी होनेवाली बहू कितनी अक़्लमंद है?" आश्चर्य प्रकट करती हुई बोली "उनके वार्तालाप में क्या इतना गूढ़ार्थ छिपा हुआ है?"

रामशास्त्री ने पूछा "अब बताओ, तुम्हें बहू अच्छी लगी है या नहीं। उसे कृष्णशास्त्री के योग्य समझती हो या नहीं"?

चन्दामामा की ख़बरें

साँस रोकने में रिकार्ड

आक्सिज़न के बिना, मतलब बिना साँस लिये, आदमी कितने समय तक रह सकता है? इसकी परीक्षा पिछली फरवरी २५ को स्वीडन के एक जियोफिज़िलाज़िकल लाबोरेटरी में हुई। २७ साल को पीटर हिर्वेल नाम के एक युवक ने इस परीक्षा में भाग लिया। वह अपने मुखड़े पर किसी भी प्रकार के साधन को पहने बिना ६ मिनिट तीन सेकेंड तक पानी में डूबा रहा और नया रिकार्ड क़ायम किया।

उत्तरी ध्रुव में अकेले पैदल सफ़र
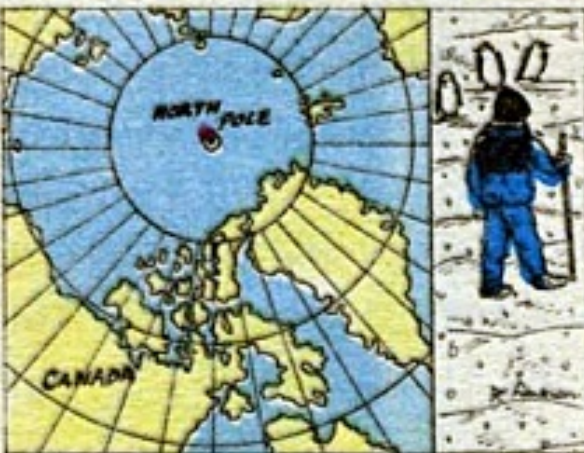
इंग्लैड का रूपेर्ट हाडो की उम्र ३१ है। वह साहसी युवक मार्च ६ वीं तारख को अकेले ही उत्तरी ध्रुव पैदल चल पड़ा। उसे मार्ग दर्शन के लिए ना ही कुत्ते थे, ना ही कोई सवारी। उसके पास कम से कम आक्सिज़न भी नहीं था। केनेडा का हार्ड हान्ट द्वीप उत्तरी ध्रुव से ११०० कि. मीटर की दूरी पर है। फिर भी उसने अकेले ही सफ़र करने का निर्णय लिया। अगर वह उत्तरी ध्रुव पहुँच जाए तो, वही प्रथम साहसी होगा, जिसने अकेले ही वहाँ जाने का प्रयास किया।

पतंगों का उत्सव

मार्च के आख़िरी सप्ताह में थायलांड में 'अंतर्राष्ट्रीय पतंगों के उत्सव' का आयोजन हुआ। उक्त उत्सव में बारह देशों नें भाग लिया। राजधानी बांगांक का आकाश रंग बिरंगे पतंगों से छा गया। ये पतंगें विविध आकारों में सजी हुई थीं; इनकी रूप-रेखाएँ भिन्न थीं; इनके रंग विविध प्रकार के थे। 'वारियर' नामक जापान की पतंग, पाँच मीटर की इंडोनेशिया की पतंग, सूवर्ण रंग की मलेशिया की पतंग चाँदी के रंग की नेपाल की पतंग तथा अमेरीका की 'नो विंड' नामक पतंगों ने जनता को विशेष रूप से आकर्षित किया। उनके दिलों को उत्साह से भर दिया।

दादी की ममता

बहुत पहले की बात है। श्रावस्ती नगर में सुमंत नामक एक बुद्धिमान युवक था। पिता की मृत्यु के बाद वह अपनी माँ की देखभाल बड़ी श्रद्धा और भक्ति से करता रहा। उसको कोई कष्ट होने नहीं देता था। उसका पूरा समय माँ की सेवा में ही बीत जाता था, इसलिए उसने नौकरी नहीं की। माँ ने उससे कहा "बेटे, तुम पुरुष हो। चौबीसों घंटे मेरी ही सेवा करते रहोगे तो कैसे चलेगा? कहीं अच्छी नौकरी करो और शादी भी कर लो। तुम हमेशा मेरी ही देखभाल करते रहोगे तो तुम्हारा भविष्य क्या होगा? मेरी तो इच्छा है कि पत्नी के साथ तुम सुखी रहो। तुम्हारे बाल-बच्चे हों। अपने पोते-पोतियों के साथ मैं खेलूँ। उनकी मीठी-मीठी बातों से मेरा दिल आनंद से भर जाए। मैं अपना बुढ़ापा उनके संग बिताऊँ, इससे और मुझे क्या चाहिये? अब रही सेवाओं की बात। तुम्हारी पानी मेरी सेवाएँ करेगी। बेटी के ना होने की कमी भी वह पूरी कर देगी"।

माँ की बात वह टाल न सका। उसने शादी कर ली और नौकरी भी। उसकी पत्नी सुंदर थी। वह उसकी भी देखभाल प्रेम से करने लगा। उसकी पत्नी समझ गयी कि वह माँ को भी बहुत चाहता है। उसने सोचा, माँ के होते हुए भी मेरी देखभाल इतने प्रेम से कर रहे हैं। अगर माँ ना हो तो मालूम नहीं, कितने और प्रेम से मेरा ध्यान रखेंगे। वह तो चाहने लगी कि उसका पति उसी से प्रेम करे और उसी की आवश्यकताएँ पूरी करे। उसमें स्वार्थ की यह भावना तीव्र होती गयी। उसने तब निर्णय किया कि माँ और बेटे के बीच वैमनस्य लाऊँगी, झगड़े खड़ा कर दूँगी। पति से उसने सास के बारे में शिकायत करना शुरु कर दिया "आपकी माँ मुझे नहीं चाहती। यह आपको बताने से आपका दिल दुखेगा, इसलिए अब तक मैने यह बात छिपा रखी है। हर बात पर कोई ना कोई खोट निकालती है। भोजन गरम परोसा तो कहती है, बहुत गरम है। पैर धीरे-

(पचीस साल पूर्व चन्दामामा में प्रकाशित कहानी)

धीरे दबाती हूँ तो कहती है कि बहुत ज़ोर से दबा रही हो। भरपूर प्रयत्न कर रही हूँ, परंतु उन्हें संतृप्त नहीं कर पा रही हूँ''। आँसू बहाती हूई उसने कहा।

सुमंत ने उसकी बात का विश्वास किया। उसे लगा कि हमारा यह सुखमय जीवन देखकर वह जलती है। उसने अपनी माता से एक दिन कहा ''माँ, लगता है, तुम यहाँ सुखी नहीं हो। क्या कहीं किसी और जगह पर रहने का इरादा है? जहाँ तुम चाहो, वहाँ रह सकती हो।'' बिना साफ़ कहे उसने बता दिया कि इस घर से निकल जाओ। माँ बेटे के इरादे को समझ गयी।

वह बहू का नाटक जान गयी। उसने कहा ''हाँ, चली जाऊँगी बेटे''। वह बूढ़ी उसी गाँव के अपने बंधुओं के पास जाकर रहने लगी। वहाँ घर का काम करती, वे जो खिलाते, खाती। सुख के उसके दिन पुरानी बात हो गयी।

सास के चले जाने के कुछ समय बाद बहू गर्भवती हुई। एक बालक को जन्म दिया। वह अड़ोस-पड़ोस की औरतों से कहने लगी ''देख लिया ना, मेरी सास भी कैसी सास है? जब तक वह घर में थी, माँ बनने के सौभाग्य से वंचित रही। अब एक पुत्र-रत्न का जन्म हुआ है''।

कुछ ने उसकी बातों का विश्वास किया। उनमें से दो-तीन औरतों ने बूढ़ी से कहा ''सुना, तुम्हारी बहू क्या कहती है? कहती है, तुम्हारे उस घर में रहने से उसकी कोई संतान नहीं हुई है। तुम्हारे चले जाने पर ही पुत्र हुआ है''।

बूढ़ी यह सुनते ही आग-बबूला हो गयी। उसने कहा ''इतनी बड़ी बात कह दी उसने। धर्म का विनाश हो गया है। मैं उसकी ख़बर लेती हूँ''। कहकर पानी, चावल आदि लेकर वह श्मशान

गयी। वहाँ उसने चूल्हा जलाया और खाना पकाना शुरू कर दिया।

उस समय एक मुनि उधर से गुज़र रहा था तो उसने बूढ़ी से पूछा "माँ जी, क्या कोई मर गये हैं? इस श्मशान में खाना क्यों बना रही हो?"

"मुनिवर, आप नहीं जानते। धर्म मर गया है। उसे थोड़ा पिंड ड़ाल रही हूँ।" बूढ़ी ने कहा।

"किसने कहा कि धर्म मर गया है" मुनि ने पूछा।

"कोई और नहीं। मेरी बहू की बातों से ही यह स्पष्ट हो गया है। अधर्म प्रबल हो रहा है। मेरी बहू ने मुझे घर से निकलवा दिया। कहती है कि मेरे घर से चले जाने के कारण ही वह माँ बन पायी है। अब मानते हो ना, धर्म मर गया है"। उसकी बातों में क्रोध भरा हुआ था।

मुनि ने उससे पूरी बातों की जानकारी प्राप्त की। फिर कहा "तुम्हारे बेटे और बहू ने तुम पर बड़ा अत्याचार किया है। अभी अपनी तपोशक्ति से उनका नाश कर दूँगा"। क्रोध से अपने कमंडल से पानी हथेली पर ड़ालने लगा।

बूढ़ी ने तुरंत उसे रोका और कहा "नहीं ऐसा मत कीजिये मुनिवर। उन दोनों ने मेरा अपमान किया, मुझपर अत्याचार किया। परंतु जो हो गया, सो हो गया। उन दोनों के मर जाने से मेरा पोता अनाथ हो जायेगा। शाप मत दीजिये"।

बूढ़ी ने अपने पोते को देखा तक नहीं, पर पोते पर जो ममता थी, उसे देखकर हँसता हुआ मुनि वहाँ से चला गया।

इतने में यह बात गाँव भर में फैली। सुमंत और उसकी पत्नी तथा अन्य लोग दौड़े हुए श्मशान आये।

"माँ यह क्या कर रही हो। चलो, घर चलते हैं"। बेटे ने कहा।

बहू समझ गयी कि मेरा खेल ख़तम हो गया। वह ड़रने लगी कि उसका कपट प्रकट हो जायेगा। उसने कहा "भूल हो गयी। मुँह मे जो आया, बक दिया। क्षमा कीजिये सासजी"। बहू सास के पैरों पर गिरी।

बूढ़ी शांत होकर उनके साथ घर गयी। अपने पोते को देखकर संतुष्ट होती हुई पुरानी सारी बाते भूल गयी।

वीर हनुमान

गंधमादन पर्वत पर राम नाम का जप करने में जब हनुमान लीन था, तब ब्रह्मा उसके पास आये और बोले "हनुमान, कलियुग का पदार्पण होने वाला है। कलि से तुम्हारी नहीं बनती। क्षीरसागर सर्वोच्च स्थल है। अतः तुम वहीं तक्षण जाना।"

विष्णु क्षीरसागर में शेष शय्या पर लेटे हुए हैं। वहाँ तुँबुर और नारद सदा संगीत सुनाते रहते हैं। नारद महति वीणा के तारों को झंकृत करता हुआ उत्तम कोटि के भक्तिपूर्ण कीर्तनों को गाता रहता है। तुँबुर भी अपने को नारद के समान प्रमाणित करने के लिए हयग्रीव नामक वीणा पर शास्त्रीय गान सुनाया करता है। वह बीच-बीच में वीणा पर ही मृदंग की अद्भुत ध्वनियों की भी सृष्टि करता हैं। उन दोनों की ऐसी संगीत-सुधा सदा प्रवाहित होती रहती है।

तुँबुर और नारद में सदा संगीत की प्रतिस्पर्धा होती रहती है। वे दोनों अपने को उत्तम संगीतज्ञ मानने लगे। उनमें गर्व की भावना घर कर गयी। उनमें गर्व, ईर्ष्या और द्वेष अधिक होते गये।

बात यहाँ तक पहुँची कि छोटी-छोटी बात को लेकर वे परस्पर झगड़ने लगे। संगीत रोक देते और अपनी वीणाओं को आयुध बनाकर एक दूसरे पर प्रहार करते रहते। एक दूसरे को दूषित शब्दों से संबोधित करते हुए भी हिचकिचाते नहीं हैं। वे विष्णु पर यह बताने के लिए दबाव भी डालते रहे कि हम दोनों में से कौन श्रेष्ठ संगीतज्ञ है?

विष्णु उनको उत्तर दे नहीं पाते अतः वे योग निद्रा में लीन हो जाते। फिर भी वे दोनों उनके कानों के पास जाकर ज़ोर-ज़ोर से गाते और पूछते "अपना निर्णय बताएँगे कि नहीं, हम दोनों संगीतज्ञों में से बड़ा कौन हैं?" यों विष्णु को उन दोनों ने कष्टों में ड़ाल दिया।

एक दिन विष्णु झल्लाते हुए बोले "तुम लोगों के संगीत से बेसुध होकर योग-निद्रा में चला जाता हूँ। इस कारण मैं निर्णय पर पहुँच नहीं पा रहा हूँ कि तुम दोनों में से कौन उत्तम संगीतज्ञ है। गंधमादन पर्वत पर एक वानर है। उससे कहिये कि तुम्हें राम बुला रहा है, तो वह आपके साथ-साथ चला आयेगा। उस वानर के सम्मुख अपनी संगीत-प्रतिभा का परिचय दीजिये। वह आपके बारे में बहुत ही नपा-तुला निर्णय दे पायेगा"। यों विष्णु ने उन दोनों को हनुमान के पास भेजा।

विष्णु के इस परामर्श से तुँबुर और नारद दिग्भ्रांत रह गये। परंतु करें क्या? दोनों विवश हो गंधमादन पर्वत पहुँचे। हनुमान का राम स्मरण उन्हें दूरी से ही सुनायी पड़ा। दोनों हनुमान के निकट गये और विनय-भाव से खड़े हो गये।

आँखे मूँदकर हनुमान राम-नाम स्मरण में मग्न हैं। लगता है कि राम-नाम गायन के स्तर को धटा-बढ़ाकर संगीतयुक्त करके वह जप कर रहा हों। उसके इस जप में भिन्न मधुर राग सुनाई दे रहे हैं। उन रागों के सम्मेलन से उत्तम भाव जग रहे हैं। राम नामक दो अक्षर ही ताल और गति के साथ लय बद्ध होकर मधुर संगीत की सृष्टि कर रहे हैं। तुंम्बुर और नारद इस अपूर्व गायन से स्तब्ध रह गये। जिस काम पर वे आये, भूल गये। वे समझ गये कि हनुमान महान नादोपासक है। उनकी समझ में आ गया कि साहित्य तथा शास्त्र से भी गात्र माधुर्य उत्तमोत्तम है। वे भी हनुमान के जप में लीन हो गये और वे भी राम नाम का जप करने लगे। हनुमान के गायन की मिठास के सम्मुख उनका गायन शुष्क है; दोनों में आकाश-पाताल का अंतर है। इस अंतर ने हनुमान को

जप से जगाया और उसने आँखे खोलीं। राम स्मरण में बेसुध तुम्बुर और नारद को उसने देखा।

हनुमान तक्षण उठा और उनके पैरों का स्पर्श करके प्रणाम किया।

तुम्बुर और नारद संभल गये और अपने पैरों को पीछे हटाते हुए बोले "महोदय, आप हमारे पैरों को क्यों प्रणाम कर रहे हैं? आप पहचान गये हैं ना, हम तुम्बुर और नारद हैं।"

"आप कोई भी हो सकते हैं। जो भी राम-नाम का जप करते है, वे सब मेरे आराध्यदेव हैं। अधम से अधम व्यक्ति भी जब राम नाम का जप करता है, तब वह मेरी दृष्टि में महान है; राम का भक्त है, उत्तम मनुष्य है। ऐसे उत्तम मनुष्यों की पाद-धूलि अपने सर पर डाल लेता हूँ। इससे मुझे तृप्ति होती है, आनंद पहुँचता है और यह मेरा परमभाग्य है।" हनुमान ने भक्तिभाव से कहा।

हनुमान के संगीत-ज्ञान तथा उसकी भक्ति-तत्परता को देखकर तुम्बुर और नारद आश्चर्य में डूबे एक दूसरे को देखने लगे। "उन्होंने भक्तों के बारे में बहुत कुछ सुन रखा है। किन्तु ऐसे विलक्षण तथा अदभुत भक्त को ना देखा, ना सुना। यह कैसा भक्त है, जो प्रति पल अपने भगवान का ही नाम जपता रहता है। उसी का नाम स्मरण करते हुए अन्न-पान की ही सुध नहीं रखता। उसे ही ज्ञात नहीं कि इस नाम-स्मरण में संगीत की

सुधा प्रवाहित हो रही हैं।

आश्चर्य की बात तो यह है कि इसकी दृष्टि में राम नाम जपनेवाला पापी भी पुण्यवान है। यह उसकी उस भगवान के प्रति निष्ठा का सूचक है, जिसकी वह पूजा करता है,जो उसके रोम -रोम में समा गया है। वे दोनों उसके अपूर्व, अद्वितीय तथा अनोखे व्यक्तित्व का विश्लेषण करते हुए अपने आप को भूल गये।

उन्हें अब याद आया कि उनका आगमन यहाँ क्यों हुआ। नारद ने कहा "राम ने तुम्हें बुला भेजा है। वे क्षीरसागर में शेषशय्या पर लेटे हुए हैं"।

राम का नाम सुनते ही हनुमान अति आनंदित होकर उनके साथ क्षीरसागर चल पड़ा।

क्षीरसागर में पहुँचते ही गरुड ने उसका स्वागत किया। हनुमान की भुजाओं पर हाथ रखकर उसका कुशल-मंगल पूछा। उसे विष्णु के पास ले गया।

विष्णु हनुमान को राम ही जैसे लगे। उसे स्मरण हो आया कि विष्णु ही राम हैं और राम ही विष्णु हैं। हनुमान ने झुककर भक्तिपूर्वक प्रणाम किया।

विष्णु ने हनुमान से कहा "हनुमान, तुँबुर और नारद में गायन को लेकर प्रतिस्पर्धा है। मेरी आकांक्षा है कि तुम उनके संगीत-पांडित्य की परीक्षा लो। अपना निर्णय बताओ कि इन दोनों में कौन उत्तम कोटि का संगीतज्ञ है। ये दोनों चाहते हैं कि मैं अपना निर्णय बताऊँ कि इन दोनों से कौन बड़ा संगीतज्ञ है। किन्तु यह निर्णय मेरे लिए संभव नहीं है। तुम उच्च कोटि के महान संगीतज्ञ हो। यह निर्णय तुम्हें ही करना पड़ेगा। उनकी परीक्षा लेने के पहले तुम अपना मधुर गायन सुनाओ।"

हनुमान ने कहा "राम, राम, आपने कितनी बड़ी बात कह दी। मैं संगीतज्ञ हूँ ही नहीं। सा रे ग मा से अनभिज्ञ वानर हूँ। वायु का पुत्र हूँ। मेरे गायन में सम नहीं होता। महामहिमों के सम्मुख गाने की योग्यता मुझमें है ही नहीं"।

"हनुमान, तुम्हें अपनी योग्यता की कल्पना नहीं। तुमने सूर्य से समस्त शास्त्र कलाएँ व नवीन व्याकरणों का संपूर्ण अध्ययन किया है। मै पहले भी कह चुका हूँ कि जब तक तुम्हें कोई नहीं बताता, तब तक तुम अपनी शक्ति से परिचित नहीं हो पाते। मेरा कहा सुनो और गाओ" विष्णु ने कहा।

हनुमान ने अपने नाम के 'ह' से 'हा' का उच्चारण करते हुए गायन का प्रारंभ किया। विष्णु के प्रिय हिंदोल राग का आलाप करने लगा।

हनुमान ने हिन्दोल राग को वैजयंती राग में मोड़ा और राम-नाम का स्मरण करने लगा। राम नामक दो अक्षर मात्र लेकर अनेकों रागों में हनुमान जब गाने लगा, तब क्षीरसागर की तरंगें नाचने लगीं। श्रोताओं के हृदयों में आनंद की तरंगे उत्तुंग हो उठीं। तुम्बुर और नारद में भक्तिभाव उत्पन्न हुए। ऐसी अनुभूति उन्हें कभी नहीं हुई। हनुमान चरमसीमा पर पहुँचा। क्षीरसागर की तरंगे उठीं और नक्षत्रों को ढक दिया। शेष नाग अपनी सहस्र फनें फैलाकर झूमता रहा। हनुमान निम्न स्तर पर पहुँचकर देवगांधार राग आलापने लगा।

शांतिरस पूरित उस राग से समुद्र क्रमश: जम गया और कठोर हो गया। तुम्बुर और नारद के हयग्रीव व महति वीणाएँ तिनके की तरह उसमें रह गयीं। क्षीरसागर और भी जमकर संगेमरमर पथ्थर की तरह हो गया। शेष नाग उसमें दबकर पीड़ा का अनुभव

करने लगा।

विष्णु ने हनुमान को रुक जाने का संकेत किया। संगीत के हठात् रुक जाने से तुम्बुर और नारद चौंक उठे और संगमरमर जैसे दीखनेवाले समुद्र में पड़ी अपनी वीणाएँ देखीं।

"तुम लोग गाकर समुद्र को पिघलाओ और अपनी वीणाएँ लो" विष्णु ने उन्हें आज्ञा दी।

नारद के भक्ति गीतों अथवा तुम्बुर के संगीत-शास्त्र से समुद्र रत्ती भर भी नहीं पिघला। उनके संगीत-ज्ञान का गर्व चूर-चूर हो गया और उन्होने लज्जा से सिर झुका लिया।

विष्णु के आदेशानुसार हनुमान ने पुनः गाया। भूपाल, बसंत, जंझूटि, दीपिका आदि रागों से राम नाम का गायन किया।

इस गायन से राग-रागिणियों ने रूप धारण किया और नृत्य करने लगे। हनुमान का संगीत पराकाष्ठा पर पहुँचकर प्रलय प्रकंपन करने लगा। शिव कैलास से डमरू बजाते हुए तांडव नृत्य करते हुए आये। उनके साथ-साथ पार्वती, गणपति तथा प्रमथगण आये। ब्रह्मा पद्मासन से उतरकर आये। उनके साथ सरस्वती वीणा झंकृत करती हुई आयी। इंद्र आदि देवतागण भी आये। क्षीरसागर तरंगों से डोलायमान होने लगा।

क्षीरसागर विवाह मंडप-सा लगने लगा। लक्ष्मी-नारायण तब वर-वधु से लगने लगे। हनुमान तन्मय होकर गाता जा रहा है और कल्पना-लोक में विचरने लगा कि सीता-राम का विवाह भी ऐसा ही हुआ होगा।

तुम्बुर और नारद ने वीणाएँ लीं। आदिशेष ने अपनी शय्या ठीक कर ली।

"हनुमान के गायन की रीति हनुमद्गान के नाम से सुप्रसिद्ध होकर स्थायी रहेगी। पंडित तथा सामान्यों को आकर्षित करके उनके हृदय में गौरवनीय स्थान प्राप्त करेगी। नारद का संगीत भाव-प्रधान है। तुम्बुर का संगीत ताल प्रधान है। भाव और ताल का समन्वय करता है राग। भाव, राग और ताल समान हैं, किन्तु राग प्राण-समान है, रसात्मक है। हृदय पर उसका प्रभाव अधिक
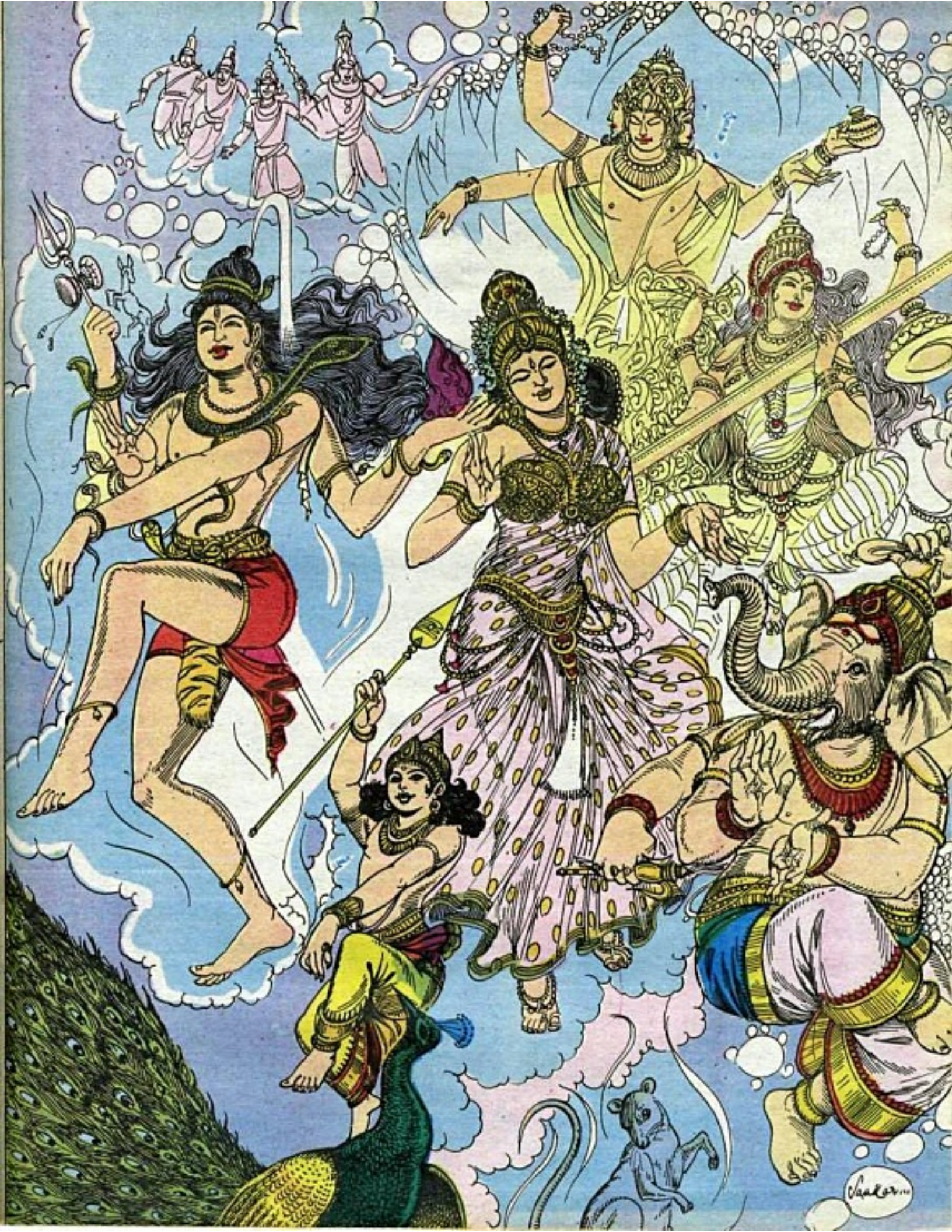
है। हनुमद्गान राग प्रधान है, अतः शाश्वत रूप से वह जन को संतुष्ट करता रहेगा; उनका मनोरंजन करेगा।'' सरस्वती ने अपना निर्णय सुनाया।

ब्रह्मा आगे बढ़े और बोले ''हनुमान, बिना किसी इच्छा-प्राप्ति के तुमने तपस्या की। इसका मुल्यांकन मैं अर्थात ब्रह्मा भी नहीं कर सकता। इससे उन्नत उपलब्धि और क्या हो सकती है। तुम भविष्य में ब्रह्मा बनोगे। रामनाम का जप करके तुमने जो घोर तपस्या की है, उसीने लिख रखा है कि तुम्हें ब्रह्मा का कार्य संभालना ही पड़ेगा। भविष्य में तुम्हारे ही द्वारा मानव-सृष्टि होगी''।

शिव आगे आये और बोले ''हनुमान इस ब्रह्मा की सृष्टि में अच्छे लोग कम और बुरे लोग अधिक पैदा हुए हैं; पैदा हो रहे हैं; पैदा होगे। अपने भगवान होने के गर्व के नशे में डूब जाने तथा परिपूर्ण मानवता के प्रति विश्वास ना होने के कारण ऐसा हुआ है। तुम वानर हो, परंतु तूम्हारा ध्यान-केंद्र सदा राम ही रहा। अतः तुमसे सृजित सृष्टि में राम जैसे परिपूर्ण मानव, सीता जैसी आत्माभिमानिनी, लक्ष्मण जैसा आदर्श पुरुष पर्याप्त मात्रा में होंगे। तब तक तुम विष्णु के साथ ही रहो''।

तब ब्रह्मा ने कहा ''कुछ सद्गुणियों के बीच कुछ दुर्गुणी भी होते हैं। किन्तु उन्हें सुधारा जा सकता है। यह काम सुगम भी है। वह तुम्हारी सृष्टि में संभव होगा। भविष्य में विष्णु की नाभि से नवनूतन कमल विकसित होगा। उस पद्मासन पर ब्रह्मा बनकर तुम आसीन होनेवाले हो। भविष्य के तुम ब्रह्मा हो, सृष्टिकर्ता हो।''

सभी ने प्रार्थना की कि हनुमान मंगलगान सुनाएँ। हनुमान ने श्रीराग में मंगलगान गाया।

नारद, तुम्बुर, गरुड़, आदियों के साथ क्षीरसागर में हनुमान लक्ष्मी, नारायण को सीता, राम मानकर उनकी सोवाओं में तत्पर रहा।

(समाप्त)
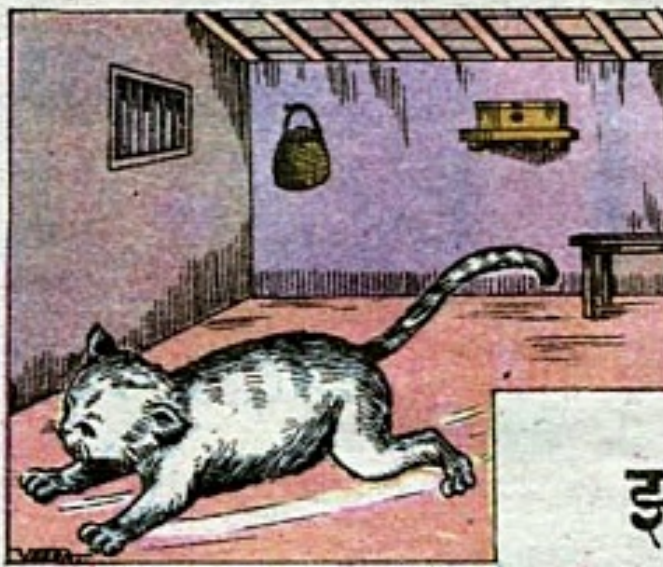
झगड़ालू पति-पत्नी

कमलापुर के कमलनाथ और कमला का जब विवाह तय हुआ तब सबने समझा कि नामों में जैसा साम्य है, वैसा ही साम्य उनके कौटुंबिक जीवन में भी होगा।

किन्तु शादी हुए एक साल भी पूरा नहीं हुआ कि दोनों सदा आपस में झगड़ा करने लग गये। सब लोग उनके बारे में कहने लगे कि पति झगड़ालू है तो पत्नी आग का गोला है। एक क्षण भी दोनों में शांति नहीं होती थी। छोटी-सी छोटी बात पर भी वे चिल्लाते थे। लोगों के मुंह से उनके इस दुर्व्यवहार पर कड़वी टिप्पणियां होती रहती थीं।

एक रात को बिल्ली के म्याव म्याव से उनकी निद्रा का भंग हो गया। मालूम नहीं, किस खिड़की से वह कूदी, उन्हीं के पलंग के नीचे बैठकर म्याव-म्याव करने लगी।

कमलनाथ ने कहा "अरी कुंभकर्ण की प्यारी-प्यारी बहन, सोने के पहले सब खिड़कियों को बंद करने को कहता हूं, परंतु तुम्हें मेरी बात की परवाह नहीं। उस बिल्ली को वहां से हटाओ"। सोयी हुई पत्नी पर ढके चादर को हटाता हुआ नाराज़ी से बोला।

कमला अंगड़ाई लेती हुई बोली "आधी रात को प्रेत की तरह क्यों चिल्लाते हो? अगर उसे भगाना है तो तुम्हीं करो। नींद खराब होती है तुम्हारी नहीं, मेरी" चादर ओढ़ती हुई उसने निधड़क जवाब दिया।

कमलनाथ समझ गया कि वह उठेगी नहीं तो नींद के नशे में ही कोने में रखी एक लाठी निकाली। बिल्ली ने अपनी हार आसानी से नहीं मानी। वह सोने के कमरे से बीच के कमरे में और वहां से सामने के कमरे में दौड़ती रही, और कमलनाथ लाठी लेकर उसका पीछा करता रहा।

कमलनाथ जब सोने के कमरे में आया तो उसने दरवाज़ा बंद कर दिया, जिससे बिल्ली

उन्होंने कमलनाथ को एक खंभे से रस्सी से बाँध दिया। तब तक कमलनाथ संभल गया और बोला "पूरी रस्सी मुझे ही बाँधने के काम में मत लाइये। उस कमरे में मेरी पत्नी है और वह मोटी भी है"।

"मैं औरत को अपनी लाल आँखें दिखाकर ही चुप कर सकता हूँ" काले चोर ने ज़ोर से हँसते हुए कहा।

काला चोर कमला के कमरे में आया। आहट पाकर कमला पलंग पर ही करवटें बदलती हुई बोली "तुम भी कैसे मर्द हो? एक मामूली बिल्ली को भगाने में इतना समय ले लिया। लगता है तुम बिल्ली को नहीं, बाघ को भगा रहे हो?" उसने सोचा कमलनाथ अंदर आया था।

"अपने पति का वैभव स्वयं देखना। चलो मेरे साथ।" कहता हुआ उसने लाठी गले पर रखी। कमला स्थिति भाँप गयी।

कमला की नींद भाग गयी। वह चोर के साथ दूसरे कमरे में आयी और खंभे से बंधे हुए अपने पति की दुर्दशा देखती हुई ठठाकर हँसती बोली "यह काम तो मैं बहुत दिनों से करना चाहती हूँ"।

यह सुनकर चोरों का चेहरा फीका पड़ गया। अब उनकी समझ में आ गया कि पति-पत्नी एक दूसरे को नहीं चाहते। उन्होंने सोचा, अब हमारा काम और आसान हो गया है।

काले चोर ने उससे कहा "चुप रहो। घर में

अंदर न जाए। फिर गली का दरवाज़ा खोला और बिल्ली को धमकाया-डराया। वह अंधेरे में भागती निकल गयी।

कमलनाथ अपनी जीत पर हँसता हुआ दरवाज़ा बंद करने ही वाला था कि लंबे-चौड़े दो चोर सामने आये। वे बोले, "हमने ही बिल्ली को खिड़की से अंदर भेजा है। हमको मालूम था कि उसको भगाने के लिए तुम बाहर का यह दरवाज़ा खोलोगे।" कहते हुए लाठियों सहित अंदर प्रवेश किया।

कमलनाथ डर से काँपने लगा। वह कुछ कहने का साहस भी नहीं कर पा रहा था। उन चोरों में से एक ने कहा "मुँह बंद रखो। आवाज़ निकाली तो गला घोंट देंगे"।

जो क़ीमती चीज़े हैं, उन्हें सब यहाँ ले आओ''।

''क़ीमती चीजें और मेरे घर में। यहाँ ताँबे के बरतनों के अलावा और है ही क्या? मेरा पति कल ही अपने वेतन की रक़म ले आया और अपने सिरहाने सुरक्षित रखा है। शादी हुए इतने साल हो गये, परंतु उस कंजूस ने अब तक यह नहीं बताया कि उसे कितना वेतन मिलता है। वह थैली लाइये और कृपया मुझे बताइये काले चोरजी कि उसमें कितनी रक़म है?''

कमलनाथ नाराज़ होता हुआ बोला ''अरी डायन, वेतन की पूरी रक़म चोरों के हवाले कर रही हो? महीना भर तुम्हें फाक़ा रखना होगा, तब मालूम होगा आटे-दाल का भाव।''

काला चोर थैली ले आया और बिना खोले ही बोला ''छोटी बहन, अब हमारे पास गिनने के लिए समय नहीं है। अपनी गुफ़ा में गिनकर अगले अमावस को बताऊँगा''।

''ठीक है भाई साहब, जैसी तुम्हारी इच्छा। इस अमावास को नहीं तो अगली अमावस को ज़रूर बताना। अंगूठी के बिना तुम्हारी उँगली खाली-खाली लगती है। मेरे मायकेवालों ने इसे हीरे की अंगूठी दी है। पर क्या फ़ायदा। ये तो उन्हें हमेशा कोसते रहते हैं। फिर उनकी अंगूठी पहनने का इन्हें क्या हक़ है? तुम उसे ले लो।''

फ़ौरन काले चोर ने अंगूठी निकाल ली।

कमलनाथ क्रोध से काँपता हुआ बोला ''महाशय, चोरों के डर से इसने अपने सारे

गहने एक पेटी में बंद किया और पिछवाड़े के कुएँ में डाल दिया। कोई त्योहार आ जाए तो कुएँ में उतरना पडता है मुझे। काम हो जाने पर फिर से कुएँ में ड़ालने का काम मुझे ही करना पड़ता है। आप ही सोचिये, इससे मुझे कितनी तक़लीफ़ उठानी पड़ती होगी। मेरा भी दुर्भाग्य, ऐसी पत्नी से पाला पड़ा।''

कमला चिल्लाती बोली ''कई साल हो गये शादी हुए, लेकिन क्या फ़ायदा। तुमने तो रत्ती भर का सोना भी नहीं खरीदा। तुमने आज तक सोचा नहीं कि औरतों को आभूषण अच्छे लगते हैं। उन्हें पहनने के लिए वे लालायित रहते हैं। सच कहें तो वे उनपर मरती हैं। परंतु तुम्हें इसका कोई ख्याल नहीं। तुम्हें अपने पैसों का ही ध्यान रहता

रखे कपड़े दिये। यह उपाय चोरों को सूझा ही नहीं था।

कमलनाथ कुछ कहना चाहता था, पर इतने में चोरों ने उसके मुँह में कपड़े ठूँस दिये।

सफ़ेद चोर कुएँ में उतरा। इस बीच वह काले चोर के पास आयी। कमला उमड़-उमड़ कर आते हुए अपने दुख को रोकती हुई काले चोर से बोली "बड़ा दुष्ट है मेरा पति। हमारे मायकेवालों के दिये हुए गहनों का राज़ बता दिया। उससे मैं थोड़े ही कम हूँ। जब उसने मेरे गहनों का रहस्य बता दिया तो क्या मैं उसका रहस्य नहीं बताऊँगी? ध्यान से सुनो, मेरे पति की माँ काशी जाने के पहले बहुत गहने दे गयी। उसने सब पेटी में बंद किया और कमरे के टाँड़ पर रख दिया। वे गहने कहीं छोड़कर तो जाओगे नहीं ना?"

मुर्गी की बांग सुनायी दे रही थी, इसलिए काले चोर ने कहा "जल्दी मुझे वह कमरा दिखाओ"। वह कमला के साथ कमरे में आया।

वह जब पुराने सामान से भरे कमरे में गया तो एक पल की भी देरी किये बिना कमला ने दरवाज़ा बाहर से बंद कर दिया।

फिर उसने आराम से कमलनाथ को छुड़ाया और मुँह में ठूँसा हुआ कपड़ा खींचती हुई बोली "दोनों चोर हाथ आये हैं। अब आराम से सूर्योदय तक हम सो सकते हैं"।

आतुर हो कमलनाथ ने पूछा "वे अब कहाँ हैं"।

है। वेतन की रक़म लाते हो तो अपने ही पास रखते हो। ख़र्च के लिए ज़रूरत पड़े तो एक-एक पैसा गिनकर देते हो। तुम अव्वल दर्जे के कंजूस हो। तुम कौन होते हो, मेरा सोना उठाकर ले जाने के लिए कहनेवाले?"

चोरों को लगा कि उनका काम पति-पत्नी के झगडे की वजह से और आसान होता जा रहा है। "चुपचाप कुएँ के पास हमारे साथ आओ" सफ़ेद चोर ने लाठी दिखाते हुए कमला से कहा।

कमलनाथ हँसता बोला "यों ला उसे सही रास्ते पर।"

"हम पिछवाड़े में जाएँगे तो शायद ये चिल्ला पड़ें। तब तुम लोग पकड़े जाओगे। मुँह में कपड़े ठूँसिये।" कहती हुई कमला ने बगल में

"एक बुद्धू पाताल में तो दूसरा गोबर गणेश आकाश में" कमला ने कहा।

कमलनाथ चिढ़ता हुआ बोला "तुम तो कभी भी बात साफ़ ही नहीं कहती हो। अब कहो, क्या हुआ है?"

कमला ने पूरा विवरण उसे दिया।

"तुम्हारी अक्ल मारी गयी क्या? अब तक कुएँ के अंदर गया हुआ वह चोर बाहर आ गया होगा" कमलनाथ ने कहा।

"सामान के कमरे में काले चोर को ले जाने के पहले ही सफ़ेद चोर की उस रस्सी को मैंने घिरनी से हटा दिया, जिसके सहारे वह उतरा था।

प्रातःकाल कमलनाथ ने ग्रामाधिकारी को यह समाचार सुनाया। वह आदमियों के साथ आया और चोरों को पकड़ लिया। चोरों के पास जो रक़म और अंगूठी थी, कमला ने ले लिया।

हाल ही में उस प्रांत के ज़मींदार ने मुनादी भी पिटवायी थी कि इन मंजे दो चोरों को पकड़नेवालों को बहुमूल्य पुरस्कार दिया जाएगा।

कमलनाथ ने पत्नी से बहस किया "मैंने ही नाटक किया था कि गहने कुएँ में हैं। मेरे ही कारण चोर पकड़े गये हैं। इसलिए पुरस्कार मुझे मिलना चाहिये"।

"सास तो हमारी शादी के पहले ही मर चुकी थी। ऐसी सास की सृष्टि करके गढ़ंत कहानी सुनाकर एक को कुएँ में डाल दिया तो दूसरे को कमरे में बंद किया। दोनों चोरों की मैंने दुर्गति की है और दोनों मेरे हाथ ही बंदी हुए हैं" कमला ने अपना तर्क प्रस्तुत किया।

दोनों में जोर-शोर से वाद-विवाद होने लगा।

"आपस में झगड़ते हुए भी आप दोनों ने महान कार्य किया है। आप मिल-जुलकर रहें तो आपके सामने किसी के टिकने का सवाल ही नहीं उठता"। ग्रामाधिकारी तथा ग्राम की जनता ने मुक्त कंठ से उनकी प्रशंसा की। जमींदार ने पुरस्कार के रूप में बड़ी रक़म भेजी। गाँव में उनका सम्मान हुआ और उस अवसर पर रक़म दोनों में समान बांटी गयी।

रागी के श्रोता

रागी में गाने की तीव्र इच्छा थी। वह चाहता था कि जब वह गाये तब सब उसका गाना सुनें। परंतु जब वह गाता तो बड़े लोग उसे गालियाँ देते थे; छोटे रोते थे; उसकी उम्र के लोग भाग जाते थे।

रागी की दादी बहुत अच्छा गाती थी। रागी ने उससे बिनती कि मुझे भी गाना सिखाओ। दादी ने कहा "तुम भी तो अच्छा गाते हो।"

"अच्छा ही गाता हूँ, पर क्या फ़ायदा। कोई भी मेरा गाना सुनने के लिए तैयार नहीं। तुम जब गाती हो तो सब सुनते है। मेरी भी इच्छा है कि सब मेरा गाना सुनें"। रागी ने कहा

"बचपन में मेरा गाना कोई भी सुनता नहीं था। जब बड़ी हो गयी हूँ तो लोग मेरा गाना सुनने लगे हैं और मेरे प्रति आदर दिखा रहे हैं। बड़े होने तक तुम भी प्रतीक्षा करो। अवश्य ही तुम्हारा गाना भी सुनेंगे" दादी ने कहा।

"मैं और प्रतीक्षा नहीं कर सकता। तुम्हीं अभी मुझे गाना सिखाओं" रागी ने हठ किया।

"मैं गा सकती हूँ, गाना सिखाने की कला मैं नहीं जानती। लेकिन हाँ, चाहो तो पकाना सिखा सकती हूँ" दादी ने कहा।

रागी नाराज़ होता हुआ बोला "मैं गाना सिखाने के लिए पूछ रहा हूँ और तुम पकाने की बात कर रही हो। कैसी उल्टी बात कर रही हो" चिढ़ते हुए रागी ने कहा।

"अगर तुम चाहते हो कि तुम्हारा गाना सब लोग सुनें तो सुननेवालों को अच्छे पकवान बनाकर खिला। खाने के लिए ही सही, तुम्हारा गाना सुनने आयेंगे" दादी ने सलाह दी।

"इसके लिए तो एक रसोइया रख लूँगा।" रागी ने कहा।

दादी ने उसे गाली दी और कहा " रसोइये को बहुत से पैसे देने होंगे। यह तो एक दो की बात नहीं, जिन्दगी भर तुम्हें रसोई बनानी

-रामलक्ष्मी

पड़ेगी ना?'' दादी ने कहा।

दादी के कहने पर उसने रसोई का काम अपने पंद्रहवें साल में सीख लिया। शीघ्र ही पाक-शास्त्र में वह प्रवीण हुआ।

रागी ने एक दिन अपनी दादी से पूछा ''मैं अब रसोई अच्छी बना सकता हूँ। क्या सबको बुलाकर गाना सुना दूँ?''

''ऐसा करोगे तो तुम्हारे पिता तुझे और मुझे घर से निकाल देगा। इसलिए यह ज़रूरी है कि तुम खुद कमाओ। तुम खाने के पदार्थ बनाओ और बेचो। इससे बहुत कमा पाओगे'' दादी ने कहा।

''मैंने रसोई का काम व्यापार करने के लिए नहीं सीखा। लोगों को अपना गाना सिखाने के लिए सीखा है।'' रागी ने नाराज़ी से जवाब दिया।

''नाराज़ मत होना। मेरी बात सुनो। रुचिकर पकवान बनाकर बेचोगे तो अच्छा नाम कमाओगे। तब सब लोग तुम्हारा गाना सुनने के लिए दौड़े आयेंगे।'' दादी ने कहा।

दादी की बात रागी को ठीक लगी। उसने ऐसा ही किया। उसे बहुत लाभ हुआ और एक साल ही के अंदर उसने मिठाई की एक दुकान खोली।

रागी हर दिन कुछ लोगों को अपने घर बुलाता और उन्हें रुचिकर पदार्थ खिलाकर गाना सुनाता। पहले लोग उत्साह से आते थे। लेकिन बाद लोग देरी से आते और खाकर चले

जाते। कुछ लोग गाना सुनने के बहाने आते और मिठाइयाँ खाते थे। कुछ और लोग देरी से आते और खाते ही चले चाते थे। रागी के श्रोताओं की स्थिति बड़ी ही विचित्र थी। उसके गायन से वे बहुत ही क्षुब्ध थे क्योंकि उसका गायन इतना अटपटा होता था। उसमें ना ही कोई लय था या सुर। माधुर्य तो था ही नहीं। वे कितने दिनों तक सह पाते? इसलिए कुछ समय के बाद रागी के संगीत-प्रिय लोगों का एक संघ बना और उन्होंने निर्णय किया कि एक-एक करके वे रोज़ आया करेंगे।

जिस दिन जो एकमात्र व्यक्ति आता, उस दिन उसकी हालत ही बहुत विचित्र होती थी। उसकी हालत उस चक्रपुरवासी जैसी थी, जिसे

बकासुर के पास जाना पड़ता था। उसे लगता मानों एक खरगोश एक शेर के पास जा रहा हो। बिना गये वह चुप बैठ भी नहीं सकता था, क्योंकि रागी के बनाये हुए पकवान इतने स्वादिष्ट होते थे।

उसके श्रोताओं ने जो निर्णय लिया, इसका पता रागी को लग गया। उसको निराश पाकर दादी ने कहा "जो भी हो, उन्हें तुम्हारा गाना सुनना है। तुम एक काम करो। भविष्य में रोज़ ना गाकर हफ़्ते में एक बार गाओ और सुनाओ। उनसे कहना कि यह भक्ति का गीत है। भगवान का नाम लेने पर सब आयेंगे। गाना ख़तम होने के बाद प्रसाद खिलाओ। यों अपने मन की इच्छा पूरी करो। वे भगवान का प्रसाद भी खायेंगे और तुम्हारा गाना भी सुनेंगे"।

कुछ दिनों तक इस कार्यक्रम में वह कामयाब रहा। फिर वही पुरानी बात। लोगों का आना बंद हो गया। दादी का यह उपाय भी अधिक समय तक काम नहीं आया। कारण पूछा तो लोगों ने बताया कि भगवान में हमें विश्वास नहीं है; हम नास्तिक हैं।

रागी बहुत ही निराश हुआ। तब दादी ने उससे कहा "तुम कमाल के रसोइये हो। कब तक इस गाँव में सडते रहोगे। शहर जाओ और मिठाई की दुकान खोलो। खूब कमा सकोगे। वहाँ बेरोज़गार बहुत हैं, उन्हें खिलाओ और अपना गाना सुनाओ"।

रागी अब शहर आया। मिठाई की दुकान खोली। दादी भी उसके साथ आयी। रात को हर दिन बहुत-से लोग उसका गाना सुनने आते थे। रागी के श्रोताओं ने यहाँ भी बारी-बारी से आने का इंतज़ाम कर लिया।

दुपहर के समय दुकान में भीड़ नहीं होती थी। एक भूखा भिखमंगा उस समय वहाँ खड़ा हो जाता और उन मिठाइयों को देखता रहता।

रागी ने उसे एक दिन बुलाया और कहा "मेरा गाना सुनोगे तो पेट भर खिलाऊँगा"।

भिखारी ने उसकी शर्त मान ली। रागी ने उसे एक गीत सुनाया और पेट भर खाना खिलाया।

रागी को इस बात की खुशी थी कि मुझे एक अच्छा श्रोता मिल गया है। एक दिन वह

भिखमंगे की बाट जोह रहा था तो एक नया भिखारी आया और बोला "महाशय, उसने ही मुझे भेजा था। कह रहा था, आपकी दुकान की मिठाइयाँ बहुत स्वादिष्ट होती हैं। आपका गाना मैं सुनूँगा"। रागी को संदेह हुआ। उसने पूछा "वह क्यों नहीं आया?"

"महाशय, उसे थोडा-बहुत संगीत का ज्ञान है। इसलिए आपका गाने सुनने में तकलीफ़ महसूस कर रहा है। संगीत क्या है, मैं तो जानता भी नहीं, इसलिए मुझे कोई कष्ट नहीं होगा।" भिखारी ने कहा।

वहाँ खड़ी उनकी बातों को सुनती हुई सरस्वती ठठाकर हँस पड़ी। रागी खिसियाते हुए बोला "तुम हँस क्यों रही हो?"

सरस्वती बोली "मैं रसोई बनाने से चिढ़ती हूँ। लेकिन मेरे पिता ज़ोर देते हैं कि तुम लड़की हो और रसोई का काम सीखना तुम्हारे लिए ज़रूरी है। तुम्हारी तरह बिठाकर कोई खिलाये तो गाना सुनने से मैं थकूँगी नहीं। इसी कारण इस भिखारी की बातों से मुझे हँसी आ गयी"।

"तो तुम्हें संगीत का ज्ञान नहीं?" रागी ने पूछा।

"क्यों नहीं। मेरे पिताजी बहुत बड़े संगीतज्ञ हैं। कितने ही लोग उनका संगीत सुनने आ-जाया करते हैं। मेरे पिताजी को इस बात का दुख है कि वे अतिथियिों को कुछ खिला नहीं पा रहे हैं। और मैं, रसोई बनाना बिलकुल नहीं जानती। इस बात को लेकर हमारे घर में रोज़ झगड़े होते रहते हैं"। सरस्वती ने कहा।

"तब तो मेरा गाना तुम सुनोगी ही नहीं"। रागी ने कहा।

सरस्वती ने बताया "रसोई बनाने से बचने के लिए मैं गरम पानी में भी बैठी रहने के लिए तैय्यार हूँ; बरफ़ पर सो भी सकती हूँ। उनके सामने तुम्हारे संगीत की क्या गिनती? स्त्रीयों में सहनशक्ति अधिक होती है। इच्छा के विरुद्ध जो काम करना पड़ता है, उससे बचने के लिए दस काम भी करने वे तैयार हो जाती हैं, चाहे वे उसकी पसंद के ही क्यों ना हों।"

"तो हर दिन रात को तुम्हारे घर तुम्हें रसोई सिखाऊँगा। क्या तुम मेरा गाना सुनोगी"

रागी ने पूछा।

सरस्वती ने 'हाँ' कह दिया। रागी को संदेह हुआ, इसलिए उसने सरस्वती से प्रश्न किया ''संगीत सुनने आनेवालों को खिलाने की क्या ज़रूरत है? नहीं खिलाया तो क्या वे नहीं आयेंगे?''

सरस्वती ने कहा ''जो आते हैं, संगीत सुनने के बाद पिताजी को भेंटें देते हैं। तब उन्हें थोड़ा ही सही, खिलाना अच्छा होता है ना?''

यह सुनते ही रागी की समझ में आ गया कि उसके और सरस्वती के पिता के श्रोताओं में क्या भेद है? लेकिन वह सम झ नहीं पाया कि यह भेद श्रोताओं में नहीं बल्कि अपने ही में है।

दादी उनकी ये सारी बातें एक कोने में खड़ी होकर सुन रही थी। जब वह पास आयी तो सरस्वती ने इशारे से पूछा कि यह बूढ़ी कौन हैं? तब रागी ने कहा ''तुम नहीं जानती यह मेरी दादी है''। सरस्वती हँसती बोली ''लगता है, पच्चीस साल पहले रामपुर की हाट में इन्हें देखा है।'' वह जाने लगी।

दादी ने उसका हाथ पकड़ लिया और कहा ''ठहरो। सुँदरी तो हो ही, अक़्लमंद भी लगती हो। बोलो, तुम्हारा घर कहाँ है? तुम्हारे पिता से बात करनी है।''

सरस्वती दादी को अपने घर ले गयी। दादी ने उसके बाप से सब कुछ बताया और कहा ''आपकी बेटी की स्वीकृति तो मिल गयी है। आप भी मान जाएँ तो सरस्वती की शादी अपने पोते से करवाऊँगी। सब कुछ होते हुए भी एक लड़की का रसोई बनाने से अनभिज्ञ रहना शरीर के किसी एक अंग से वंचित होने के समान है।''

''आपने ठीक कहा। उसकी शादी पर मुझे कोई आपत्ति नहीं। मेरी बेटी भी रसोई के काम से बच जायेगी। आपके बेटे को भी उसका संगीत सुनने के लिए जीवन-पर्यंत एक श्रोता मिलेगा।'' सरस्वती का पिता खुश होता बोला।

इस प्रकार रागी और सरस्वती की समस्या का हल हो गया। दोनों आनंद से रहने लगे।

प्रकृति- रूप अनेक

नमक

समुद्री जल क्यों खारा होता है? इस संबंध में अनेकों प्रकार की लोककथाएँ हैं। बताया गया है कि समुद्र में नमक का बहुत ही बडा जहाज़ डुबोया गया है। वायु और मेघ समुद्र पर बहुत ही क्रोधित हुए और उसका मंथन किया। किन्तु यह असली कारण नही है। नदियों का जन्म कहीं होता है। वे पहाड़ों से प्रवाहित होती हुई अपने साथ-साथ विविध प्रकार के नमकीन पदार्थों तथा खनिजों को लिये समुद्र में मिलती हैं। जल का एक अंश भाप के रूप में परिवर्तित हो जाता है, लेकिन अंतराल के लवण घने हो जाते हैं, जिससे पानी खारा हो जाता है। समुद्री जल को छोटे-छोटे टुकड़ों में सुखाकर साधारण नमक बनाया जाता है।

बिना पानी के जीवित पौधे

पौधे जीवित हों, वे बढ़ें, इसके लिए पानी की अत्यंत आवश्यकता है। यह तो सबकी जानी हुई बात है। रेगिस्तान में पानी नहीं होता, लेकिन वहाँ भी कुछ पौधे उगते हैं। इन्हें सेहुँड कहते हैं। यह कैसे संभव है? दूसरे पौधों की तरह इन्हें भी पानी की आवश्यकता है। इनके पत्ते नहीं होते। किन्तु इनके तनों में पानी के रहने की सुविधा है। इसलिए अधिक समय तक बारिश ना होने पर भी ये जीवित रह सकते हैं। इनकी जड़ें भी भूमि के अंदर फैलती हैं और जब वर्षा होती है तब अधिक से अधिक पानी को अपनाती हैं। आप चाहें तो इन सेहुँडों को कुँडियों में बड़ा कर सकते हैं। सदा पानी ड़ालने की ज़रूरत तो नहीं, लेकिन समय-समय पर इन्हें पानी देने पर जल्दी ही बड़े हो जाते हैं और देखते-देखते फूल इनमें विकसित होते हैं।

पंख-रग-रेशा

पत्तों के रग-रेशे देखने में बहुत ही सुंदर होते हैं। वे पौधों के लिए हमारे शरीर के रक्तनाल की तरह हैं। जड़ें भूमि से जो ग्रहण करती हैं, उन लवण व खनिजों को तथा अन्य पोषक पदार्थों को ये रग-रेशे ही पौधे के विविध भागों में ले जाते हैं। रग-रेशों के आहार पहुँचाने की वजह ही से पत्ते हरे-भरे दीखते हैं।
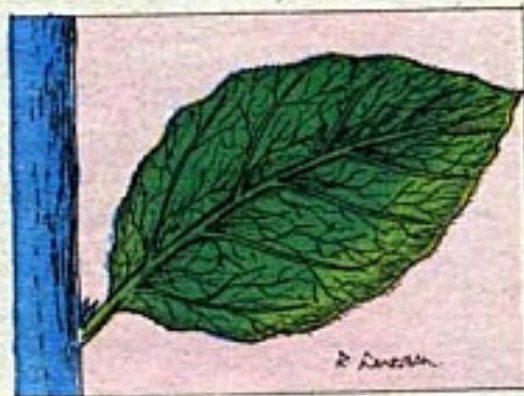
अपने प्यारे चहेते के लिए जो हो दूर सुदूर
है न यहाँ अनोखा उपहार जो होगा प्यार भरपूर

चन्दामामा

प्यारी-प्यारी सी चंदामामा दीजिए उसे उसकी अपनी पसंद की भाषा में—
आसामी, बंगला, अंग्रेजी, गुजराती, हिन्दी, कन्नड
मलयालम, मराठी, उड़िया, संस्कृत, तमिल या तेलुगु
—और घर से अलग कहीं दूर रहे उसे लूटने दीजिए घर की मौज-मस्ती

चन्दे की दरें (वार्षिक)

आस्ट्रेलिया, जापान, मलेशिया और श्रीलंका के लिए

समुद्री जहाज़ से रु. 105.00 वायु सेवा से रु. 252.00

**फ्रान्स, सिंगापुर, यू.के., यू.एस.ए.,
पश्चिम जर्मनी और दूसरे देशों के लिए**

समुद्री जहाज़ से रु. 111.00 वायु सेवा से रु. 252.00

अपने चन्दे की रकम डिमांड ड्रॉफ्ट या मनी ऑर्डर द्वारा
'चन्दामामा पब्लिकेशन्स' के नाम से निम्न पते पर भेजिए:

सर्क्युलेशन मैनेजर, चन्दामामा पब्लिकेशन्स, चन्दामामा बिल्डिंग्स, वडपलनी, मद्रास-६०० ०२६.

चन्दामामा

जो प्रकट करती है भारत का महान वैभव – अतीत और वर्तमान का – सुंदर सुंदर कथाओं द्वारा महीने बाद महीने ।

रंगीन चित्रों से सजकर ६४ पृष्ठों में फैली यह पत्रिका प्रस्तुत करती है चुनी हुई कई रोचक-प्रेरक पुराण कथाएँ, लोक कथाएँ, ऐतिहासिक कहानियाँ, महान विभूतियों की जीवन-झलकियाँ, आज की अनेक मोहक कथाएँ और जानने की बातें जो हों सचमुच काम की ।

निकलती है ११ भाषाओं में और संस्कृत में भी ।

चन्दे की जानकारी के लिए लिखें इस पते पर:

डाल्टन एजन्सीज, १८८ एन.एस.के. रोड, मद्रास-६०० ०२६.

फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता :: पुरस्कार १००)

पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ. अगस्त, १९९४ के अंक में प्रकाशित की जाएँगी।

Shanbagavalli

Sundaramurthy

★ उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियाँ एक शब्द या छोटे वाक्य में हों। ★ १० जून, '९४ तक परिचयोक्तियाँ प्राप्त होनी चाहिए। ★ अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियों को मिलाकर) रु. १००/- का पुरस्कार दिया जायेगा। ★ दोनों परिचयोक्तियाँ केवल कार्ड पर लिखकर इस पते पर भेजें।

चन्दामामा फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता, मद्रास-२६.

अप्रैल, १९९४, की प्रतियोगिता के परिणाम

पहला फोटो : **सुख की खान-मुस्कान**

दूसरा फोटो : **नन्हीं सी जान-परेशान**

प्रेषक : **कु. प्रतिष्ठा जैन** D/O **श्री नीलम कान्त जैन**

२०३, पॉकिट 'E', मयूर विहार फेन-II, दिल्ली-११० ०९१

चन्दामामा

भारत में वार्षिक चन्दा : रु ४८/-

चन्दा भेजने का पता :

डाल्टन एजन्सीज़, चन्दामामा बिल्डिंग्ज़, वडपलनी, मद्रास-६०० ०२६

Printed by B.V. REDDI at Prasad Process Private Ltd., 188 N.S.K. Salai, Madras 600 026 (India) and Published by B. VISWANATHA REDDI on behalf of CHANDAMAMA PUBLICATIONS, Chandamama Buildings, Vadapalani, Madras 600 026 (India). Controlling Editor: NAGI REDDI.

CHANDAMAMA (Hindi) June 1994 Regd. No. M. 5452